दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3 सीएम योगी ने गोरखनाथ मंदिर में मनाई होली | 5 यूपी में भाजपा के लिए बड़ी चुनौतियां | 8 धोनी अब बूढ़े हो गए: सहवाग

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 36 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 01 अप्रैल, 2024

मुख्तार की मौत की होगी न्यायिक जांच

वाराणसी । बांदा जेल में बंद पूरब के माफिया मुख्तार अंसारी की गुरुवार देर रात हार्ट अटैक (कार्डिया अरेस्ट) से मौत हो गई। मुख्तार को मौत से करीब तीन घंटे पहले ही इलाज के लिए मंडलीय कारागार से मेडिकल कॉलेज लाया गया था। जहां नौ डॉक्टरों की टीम उसके इलाज में जुटी थी। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। रात करीब साढ़े दस प्रशासन ने मुख्तार की मौत की पुष्टि की। गाजीपुर के पीजी कॉलेज से स्नातक का छात्र रहा मुख्तार अंसारी की गिनती कभी क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ियों में हुआ करती थी। मनबढ़ मुख्तार अंसारी को गलत संगत ने जरायम जगत की गंदी राह की ओर धकेल दिया। बाहुबल से बनाई गई सियासी जमीन पर मुख्तार लगातार पांच बार विधायक चुना गया। तकरीबन 18 साल छह माह जेल में रहने के बाद सलाखों के पीछे ही गुरुवार की रात मुख्तार अंसारी की मौत हो गई।

मुख्तार अंसारी का जन्म 20 जून 1963 को नगर पालिका परिषद मुहम्मदाबाद के पूर्व चेयरमैन सुबहानुल्लाह अंसारी के तीसरे पुत्र के रूप में हुआ था। एक अच्छा क्रिकेटर रहा मनबढ़ किस्म का मुख्तार 80 के दशक में साधु–मकनू गैंग से जुड़ा। साधु और मकनू को अपना गुरु मानकर जरायम जगत की बारीकियों को समझा और धीरे–धीरे खुद का अपना गैंग खड़ा कर माफिया सरगना बन गया।

वर्ष 1997 में मुख्तार अंसारी का अंतरराज्यीय गिरोह (आईएस–191) पुलिस डोजियर में दर्ज किया गया। 25 अक्तूबर 2005 को मुख्तार जेल की सलाखों के पीछे गया तो फिर बाहर नहीं निकल पाया। जेल में भी वह शान से रहता था। उसका रुतबा था। आइए जानते हैं उसके रुतबे की चार कहानियां...

दबंगई ऐसी कि मछलियां खाने के लिए गाजीपुर जेल में खुदवा दिया था तालाब

यूपी की जेलों में मुख्तार के रुआब का एक नमूना गाजीपुर जेल का किस्सा है। 2005 में मऊ में हिंसा भड़कने के बाद मुख्तार अंसारी ने सरेंडर किया था। उसे गाजीपुर जेल में रखा गया। मुख्तार तब विधायक था। मुख्तार की जेल में होने वाली अदालत में पूर्वांचल से लेकर बिहार तक के रेलवे, स्क्रैप, कोयला, रेशम आदि के ठेके–पट्टों का फैसला होता था। मोबाइल का इस्तेमाल करना कोई हैरानी की बात नहीं थी। उसने पूर्वांचल के कई जिलों में गैरकानूनी तरीके से आंध्र प्रदेश से मछली मंगवा कर बेचने का बड़ा कारोबार भी स्थापित कर लिया था। गाजीपुर में सरकारी जमीन पर कब्जा करके वेयरहाउस और होटल बनवाए थे। सपा सरकार में तो वह लंबे वक्त तक केजीएमयू में इलाज कराने के बहाने लखनऊ में टिका रहा। कहा जाता है कि उसने ताजी मछलियां खाने के लिए जेल में ही तालाब खुदवा दिया था। राज्यसभा सांसद और पूर्व डीजीपी बृजलाल ने भी इस बात को माना था।

बांदा जेल आया, डेढ़ साल खाली रही जेलर की कुर्सी

मुख्तार अंसारी को पंजाब की रोपड़ जेल से अप्रैल 2021 में यूपी की बांदा जेल शिफ्ट किया गया। इसका असर ये हुआ कि कोई भी जेलर इस जेल का चार्ज लेने के लिए ही तैयार नहीं हुआ। बाद में दो जेल अधिकारियों विजय विक्रम सिंह और एके सिंह को भेजा गया। जून 2021 में बांदा जिला प्रशासन ने जेल पर छापा मारा। उस दौरान कई जेल कर्मचारी मुख्तार की सेवा में लगे मिले। तत्कालीन डीएम अनुराग पटेल और एसपी अभिनंदन की जॉइंट रिपोर्ट पर डिप्टी जेलर वीरेश्वर प्रताप सिंह और 4 बंदी रक्षक सस्पेंड कर दिए गए थे।

बैरक से बाहर आने पर बंद हो जाते थे सीसी कैमरे

मुख्तार दो साल से बांदा जेल में बंद था। मार्च, 2023 के आखिरी हफ्ते में इस जेल से एक कैदी छूटकर बाहर आया था। नाम न बताने की शर्त पर उसने बताया कि मुख्तार को स्पेशल हाई सिक्योरिटी सेल में रखा गया था। उसकी बैरक दूसरे कैदियों से अलग थी। ये बैरक जेल के बीच वाले गेट के पास ही बनी है। गेट के पास ही वह हर रोज घंटे–दो घंटे कुर्सी 'डालकर बैठता था। वहीं जेल अधिकारियों और दूसरे कैदियों से मिलता था। मुख्तार जब तक वहां बैठता था, कोई उस गेट से आ–जा नहीं सकता था। मुझे जब जेल से छूटना था, तब भी मुख्तार उसी गेट पर बैठा था। इस वजह से मेरी रिहाई करीब दो घंटे लेट हुई। मुख्तार जितनी देर अपनी बैरक से बाहर रहता था, तब तक जेल के उस हिस्से के कैमरे बंद रहते थे, ताकि वह किससे मिल रहा है, यह किसी को पता न चले।

अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने जैसी नौबत में फंसे बिहार के यह तीन दिग्गज, खोया बहुत, पाया शून्य

दिल्ली। यह जल्दबाजी होगी, लेकिन अब सब्र वाली स्थिति भी नहीं क्योंकि सवाल राजनीतिक गलियारे में गूंज रहा है– क्या पशुपति कुमार पारस लौटकर घर जाएंगे? क्या मुकेश सहनी का राजनीतिक कॅरियर खत्म हो गया? क्या पप्पू यादव गलती कर बैठे? जवाब यहां है...राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने बिहार की 40 लोकसभा सीटों का बंटवार 18 मार्च को किया था। उसके पहले, तत्कालीन केंद्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस को समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई कि परिवार मत छोड़िए, जिद छोड़िए। उसी तरह विकासशील इंसान पार्टी के प्रमुख मुकेश सहनी को अभी से लेकर बिहार विधानसभा चुनाव तक की तस्वीर दिखाकर एनडीए ने ऑफर दिया। पशुपति कुमार पारस जिद पर अड़े रहे और 18 मार्च को सीट बंटवारे से अपना नाम गायब देख अगले दिन केंद्रीय मंत्री का पद छोड़ एनडीए से बाहर निकल आए। आए तो पटना कि राष्ट्रीय जनता दल अध्यक्ष लालू यादव इज्जत बख्शेंगे।

लेकिन, न तो पारस को कुछ नसीब हुआ और न सहनी ही कोई डील कर सके। एक डील जन अधिकार पार्टी के सर्वेसर्वा राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने दिल्ली जाकर कांग्रेस से की तो उसका हश्र भी आज महागठबंधन की पार्टियों में सीट बंटवारे के साथ दिख गया। अब इनका क्या होगा? देखिए, क्या हुआ और अब क्या होगा?

खोने वालों में नंबर 1 : पशुपति कुमार पारस

करीब छह महीने पहले से 'अमर उजाला' ने कई बार यह एंगल सामने लाया कि भारतीय जनता पार्टी अंतिम तौर पर चिराग पासवान को ही तवज्जो देगी। पशुपति कुमार पारस इस भ्रम में रहे कि जब दिवंगत रामविलास पासवान की पार्टी के दो टुकड़े हुए तो भाजपा ने उन्हें तवज्जो दी। वह यह नहीं समझ सके कि तवज्जो नहीं, वह मजबूरी थी। तब चिराग पासवान और बिहार में भाजपा की मदद से सीएम बने नीतीश कुमार दुश्मन थे। चिराग को पिछले कुछ महीनों से मिल रही तवज्जो से पारस को सबक लेनी चाहिए थी, नहीं ली। चिराग के लिए भाजपा की ओर से हाजीपुर सीट पर हरी झंडी से पारस को समझना चाहिए था, नहीं समझे। नतीजा यह हुआ कि सीट बंटवारे में लोक जनशक्ति पार्टी के नाम की घोषणा के बाद भी पारस नहीं समझे कि वह चाहें तो भतीजे चिराग पासवान के साथ बैठकर बात कर सकते हैं। नतीजा यह हुआ कि लोजपा के नाम पर घोषित पांचों सीटें लोजपा (रामविलास) के खाते में गईं और लोजपा (राष्ट्रीय) का नाम लेकर पशुपति कुमार पारस किनारे हो गए। किनारे होने के बाद भी वह केंद्रीय मंत्री पद से इस्तीफा नहीं देकर भाजपा के साथ बने रहते तो कुल्हाड़ी पैरों पर रहकर भी काटती नहीं। लेकिन, उन्होंने खुद ही कुल्हाड़ी मार ली।

अब क्या कर सकते हैं–

विकल्प 1. चिराग पासवान ने अबतक पांच में से दो ही सीटों पर प्रत्याशी का एलान किया है, पशुपति कुमार पारस सीधे भाभी रीना पासवान के पास पहुंचकर भतीजे चिराग पासवान से अपने लिए सीट मांगकर एनडीए में बने रह सकते हैं। 2. कांग्रेस की अंदरूनी उठापटक से कोई एक सीट बची तो वह उससे मांग सकते हैं। कांग्रेस उन्हें समस्तीपुर से मौका दे सकती है। 2. राजद ने अभी खगड़िया में प्रत्याशी नहीं दिया है, वह अपने गृह जिले के लिए राजद के पास जा सकते हैं। 4. राजनीतिक अस्तित्व के लिए अपनी पार्टी के और प्रत्याशी जुटाकर खुद हाजीपुर में चिराग पासवान से लड़ने के लिए उतर सकते हैं।

खोने वालों में नंबर 2 : मुकेश सहनी

विकासशील इंसान पार्टी के प्रमुख मुकेश सहनी को 2020 में बनी बिहार सरकार में मंत्री बनाया गया था। विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अपने प्रत्याशी भी इनके सिंबल पर उतारे थे, जो जाहिर तौर पर कभी भी एकमुश्त वापस हो सकते थे। वही हुआ भी। तब सहनी विधान परिषद् के रास्ते आए थे। सहनी आराम से रहते तो शायद टिक जाते, लेकिन कुछ–न–कुछ परिस्थितियां ऐसी बनीं कि वह निकल गए।

फिर उन्होंने भाजपा से दूरी बना ली। लोकसभा चुनाव के पहले जब महागठबंधन और एनडीए में से कोई उन्हें तवज्जो नहीं दे रहा था, तब भी सहनी आगे बढ़कर नहीं गए। उन्हें यह समझ में नहीं आया कि जातीय आधार पर हरी सहनी को जब भाजपा इतना आगे बढ़ाते हुए मंत्री की कुर्सी तक पहुंचा चुकी है और जदयू भी मदन सहनी को मंत्री का पद दे ही रहा है तो वह जातीय जनगणना में 2.60 प्रतिशत आबादी के नाम पर अपने लिए बहुत बड़ी डील करने की स्थिति में नहीं हैं। वह इस आधार पर डील चाहते थे और यह भी नहीं दिखाना चाह रहे थे कि उनकी ऐसी कोई खास चाहत है। इस चक्कर में एनडीए ने किनारे छोड़ दिया। अब 2019 में इन्हें साथ रखने वाले महागठबंधन में भी इनके लिए जगह नहीं बनाई गई।

अब क्या कर सकते हैं–

विकल्प 1. मुकेश सहनी की पार्टी ने पिछली बार मधुबनी, खगड़िया और मुजफ्फरपुर में प्रत्याशी दिए थे। सहनी खुद खगड़िया से उतरे थे। मुजफ्फरपुर सीट इस बार कांग्रेस, खगड़िया सीपीएम और मधुबनी राजद के पास है। राजद से ही अपने लिए कुछ मांग सकते हैं। 2. एनडीए में भाजपा या जदयू से बात कर अपने लिए एक सीट मांग लें। 3. राजनीतिक कॅरियर बचाने के लिए कुछ सीटों पर अपना प्रत्याशी अलग से उतारें।

खोने वालों में नंबर 3 : पप्पू यादव

बिहार में जन–सरोकारों को लेकर आंदोलन के लिए पूर्व सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव की बनाई जन अधिकार पार्टी चर्चित रहती थी। इस चर्चित पार्टी का पप्पू यादव ने कांग्रेस में जाकर विलय करा दिया। इस विलय से पहले वह राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव से मिलने गए थे। उसके बाद पार्टी का विलय करते समय पप्पू यादव ने मान लिया था कि उन्हें कांग्रेस पूर्णिया से प्रत्याशी बनाएगी। लेकिन, कांग्रेस की एक नहीं चली। राजद ने जदयू सरकार की पूर्व मंत्री बीमा भारती को पूर्णिया की सीट देने के नाम पर अपनी पार्टी की सदस्यता दिलाई और फिर सिंबल भी दे दिया। अब शुक्रवार को पूर्णिया सीट की औपचारिक घोषणा भी हो गई कि राजद के खाते में है। हालांकि, पप्पू यादव अब भी यहां कांग्रेस का झंडा बुलंद किए जाने की बात कह रहे हैं।

अब क्या कर सकते हैं–

विकल्प– 1. कांग्रेस समझौते के तहत पूर्णिया से पप्पू यादव को सिंबल नहीं देगी तो वह निर्दलीय खड़ा हो सकते हैं। 2. कांग्रेस सिंबल दे दे तो एनडीए–राजद के साथ पप्पू भी नामांकन दाखिल कर सकते हैं। 3. अपनी पार्टी को वापस जिंदा करने की औपचारिक घोषणा कर सकते हैं।

'डराना-धमकाना कांग्रेस की संस्कृति'
CJI को 600 वकीलों की चिट्ठी पर बोले PM मोदी

'हम भजन गाने नहीं आए हैं, भजन गाना होगा तो मठ है वहां जाएंगे, शासन में आए हैं तो शासन दमदार तरीके से चलेगा, जिसे काम करना है हमारे साथ करेगा, नहीं करना है तो छुट्टी मांगे, जीवन भर की छुट्टी सैंक्शन कर दूंगा'
योगी आदित्यनाथ, CM, यूपी

'मुख्तार अंसारी की जेल में हुई मौत को लेकर उनके परिवार द्वारा जो लगातार आशंकाएं व गंभीर आरोप लगाए गए हैं उनकी उच्च-स्तरीय जाँच जरूरी.'
मायावती, प्रमुख, BSP

बसपा विधायक राजूपाल हत्याकांड में सभी सात आरोपी दोषी करार, छह को आजीवन कारावास की सजा

लखनऊ। बसपा विधायक राजूपाल हत्याकांड में सभी सात आरोपियों को दोषी करार दिया गया है। छह को आजीवन कारावास के साथ ही 50 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई है। लखनऊ की सीबीआई कोर्ट ने बहुचर्चित राजू पाल हत्याकांड में सभी सात आरोपियों को दोषी करार दिया है। मामले में विशेष न्यायाधीश ने आरोपी फरहान को अवैध हथियार रखने के आरोप में चार साल की कैद और 20 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई। जबकि आरोपी इसरार अहमद, रणजीत पाल, जावेद, आबिद, गुलशन और अब्दुल कवि को हत्या करने का दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास तथा पचास पचास हजार रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई है। प्रकरण में अतीक अहमद और अशरफ भी आरोपी थे। बीते दिनों अतीक व अशरफ की कुछ युवाओं ने हत्या कर दी थी। जीवित बचे आरोपियों को शुक्रवार को सीबीआई कोर्ट ने सजा सुना दी।

साल 2005 में हुई थी हत्या... दिनदहाड़े गोलीबारी कर वारदात दी गई थी अंजाम

25 जनवरी, 2005 को इलाहाबाद पश्चिमी से बसपा विधायक राजू पाल की दिनदहाड़े गोलीबारी में हत्या कर दी गई थी। इस गोलीबारी में देवी पाल व संदीप यादव की भी मौत हुई थी। जबकि दो लोग गंभीर रुप से घायल हुए थे। इस हत्याकांड से ठीक 16 दिन पहले विधायक राजू पाल की पूजा पाल से शादी हुई थी। पूजा पाल ने थाना धूमनगंज में इस हत्या की एफआईआर दर्ज कराते हुए अतीक व उसके भाई अशरफ उर्फ खालिद आदिम को नामजद किया था।

सम्पादकीय

भाजपा से मुकाबले के लिए इंडिया ब्लाक में अधिकतम एकता जरूरी

कांग्रेस पार्टी अभी भी अपने गौरवशाली अतीत से चिपकी हुई है और वर्तमान परिदृश्य को स्वीकार करने में विफल हो रही है। दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में, कांग्रेस स्वचालित रूप से गठबंधन का नेतृत्व करने की उम्मीद करती है। वह अपने नेताओं को भाजपा के हाथों खो रही है और इन नेताओं के लगातार जाने से पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल गिर रहा है। मुख्य चुनाव आयुक्त द्वारा 16 मार्च को चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के बाद चुनावी घमसान शुरू हो गया है। मतदान 19 अप्रैल को शुरू होगा और 1 जून को समाप्त होगा। परिणाम 4 जून को घोषित किये जायेंगे। आखिर 2024 का लोकसभा चुनाव कौन जीतेगा? यह एक बहुदलीय प्रतियोगिता होगी, जिसमें सत्तारूढ़ भाजपा के नेतृत्व वाला एनडीए गठबंधन और इंडिया ब्लॉक का विपक्षी गठबंधन प्राथमिक दावेदार होंगे। इस बीच, गठबंधन बनाये जा रहे हैं और प्रमुख दलों ने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। दल–बदल और गुप्त सौदेबाजी भी चल रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लक्ष्य हैट्रिक लगाना (तीसरी बार जीतना) है। वर्तमान में, यह एक ऐसी घुड़दौड़ है, जिसमें भाजपा हावी है और विपक्षी दल पीछे चल रहे हैं। विपक्षी भारत गठबंधन में 26 दल शामिल हैं। उन्होंने भाजपा को चुनौती देने के लिए चुनाव पूर्व गठबंधन बनाया है। इसका लक्ष्य आगामी चुनावों में भाजपा के खिलाफ अधिकतम निर्वाचन क्षेत्रों में एक साझा विपक्षी उम्मीदवार खड़ा करना है। विपक्ष को 2014 और 2019 में लगातार दो हार का सामना करना पड़ा, जिससे उसकी छवि को काफी नुकसान पहुंचा। इसे मिलेनियल्स सहित मतदाताओं से जुड़ने की जरूरत है। विपक्ष का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस 138 साल पुरानी धर्मनिरपेक्ष पार्टी है जो एससी, एसटी, ओबीसी और मुसलमानों जैसे हाशिए पर रहने वाले समूहों का प्रतिनिधित्व करती थी। अस्सी के दशक के बाद से क्षेत्रीय दलों के उदय के साथ यह कमजोर हो गया है और आज, यह अपनी पूर्व ताकत की छाया मात्र है। इसमें नेतृत्व का अभाव है। 2014 और 2019 की हार के बाद, कांग्रेस अब दावा करती है कि वह सामाजिक न्याय और भारत के गरीबों, पीड़ितों, दलितों, किसानों, युवाओं और महिलाओं को अपनी पांच गारंटी के साथ सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैः युवा न्याय, भागीदारी न्याय, नारी न्याय, किसान न्याय और श्रमिक न्याय।

विपक्ष का लक्ष्य मुख्य रूप से भाजपा विरोधी वोटों को एकजुट करके और प्रोत्साहन देकर मोदी को चुनौती देना है। हाल के हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और तेलंगाना विधानसभा चुनावों में यह रणनीति कांग्रेस के लिए काम आई, जहां कांग्रेस ने जीत हासिल की। कांग्रेस को केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी के खिलाफ नागरिकों के एक वर्ग में सत्ता विरोधी मूड से लाभ मिलने की उम्मीद है। उन्होंने राहुल गांधी की हालिया भारत जोड़ो यात्रा पर भी प्रकाश डाला, जिसका उद्देश्य लोगों से जुड़ना था। सफल होने के लिए, कांग्रेस को चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाने वाले युवा मतदाताओं से जुड़ने के लिए मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और सामाजिक कलह जैसे रोज़ी–रोटी के मुद्दे उठाने होंगे। उन्हें उनसे अपील करने के लिए एक वैकल्पिक रणनीति दिखानी होगी। इसके साथ ही, राज्य–स्तरीय पार्टियों के कुछ शक्तिशाली मुख्यमंत्री अपने राज्यों पर हावी हैं, जिससे इन क्षेत्रों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कड़ी चुनावी लड़ाई का सामना करना पड़ा है।

2019 में, भाजपा और उसके सहयोगियों को केवल 45 फीसदी वोट मिले। शेष 55फीसदी अब इंडिया गुट में शामिल विपक्षी पार्टियों को मिले थे। हालांकि कोई भी राष्ट्रीय नेता मोदी की लोकप्रियता के बराबर का नहीं है, लेकिन कुछ प्रभावशाली क्षेत्रीय नेता अपने–अपने क्षेत्रों में मतदाताओं को प्रभावित कर सकते हैं। यह पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के लिए विशेष रूप से सच है।

गठबंधन के लिए सबसे बड़ी चुनौती मोदी के खिलाफ किसी एक नेता को आगे करना है। दुर्भाग्य से, गठबंधन सहयोगियों के बीच अहं का टकराव है, जिससे किसी पर सहमति बनाना मुश्किल हो जाता है। दूसरे, भाजपा अपार वित्तीय और राजनीतिक शक्ति के साथ एक मजबूत संगठन का दावा करती है। संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को छोड़कर, विपक्ष के पास कोई ठोस और सम्मोहक चुनावी कथा नहीं दिखती है। हालांकि, मतदाता भोजन, कपड़े और आश्रय जैसी बुनियादी जरूरतों के बारे में अधिक चिंतित हैं। उदाहरण के लिए, 2004 में सोनिया गांधी का आम आदमी नारा जनता के बीच खूब गूंजा। कम आय वाले लोग आम तौर पर तनख्वाह से तनख्वाह तक जीते हैं और अमूर्त राजनीतिक अवधारणाओं से संबंधित नहीं हो सकते हैं।

कांग्रेस पार्टी अभी भी अपने गौरवशाली अतीत से चिपकी हुई है और वर्तमान परिदृश्य को स्वीकार करने में विफल हो रही है। दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में, कांग्रेस स्वचालित रूप से गठबंधन का नेतृत्व करने की उम्मीद करती है। वह अपने नेताओं को भाजपा के हाथों खो रही है और इन नेताओं के लगातार जाने से पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल गिर रहा है। विपक्ष को भाजपा के दुष्प्रचार और धार्मिक आख्यान का ठोस जवाब लेकर सामने आना चाहिए। 1980 के बाद से भाजपा का विकास हुआ है; आज यह भारत की सबसे बड़ी पार्टी है। इसके पास असीमित धन शक्ति वाला एक मजबूत संगठन है। पार्टी प्रधानमंत्री के नाम पर वोट मांगती है। इस बार भाजपा के जीतने की ज्यादा संभावना है। भाजपा का भाग्य मोदी हैं। विभिन्न उपायों को लागू करने के कारण उनके समर्थक उन्हें कर्ता–धर्ता मानते हैं। इनमें तीन तलाक, सीएए, जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 370 को रद्द करना और अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन शामिल है। भाजपा पिछले दशक में अपनी उपलब्धियों और मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए विभिन्न कल्याणकारी पहलों पर प्रकाश डालती है। निरंतरता ने मोदी को अपना एजेंडा हासिल करने में मदद की है। मोदी ने पिछले दस वर्षों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल की है और उच्च मंच पर भारत की स्थिति सुनिश्चित की है, जिससे उनके समर्थक उत्साहित हैं। नकारात्मक पक्ष में, विपक्ष का दावा है कि मोदी सरकार विपक्षी नेताओं को निशाना बना रही है और उन पर सरकारी जांच एजेंसियों के माध्यम से कार्रवाई करवा रही है। भाजपा अन्य दलों, विधायकों और नेताओं का शिकार भी कर रही और उन्हें अपने में शामिल कर रही है। इसने दूसरी पंक्ति के कई नेताओं को शामिल कर लिया है जिन्होंने भगवा पार्टी में बेहतर संभावनाएं तलाशने का विकल्प चुना। दोनों पक्षों द्वारा अपनी–अपनी आवाज बुलंद करने के साथ, 2024 के चुनावों में बिना किसी रोक–टोक के नकारात्मक अभियान देखने को मिलेगा, क्योंकि यह विपक्ष और आक्रामक भाजपा का भविष्य तय करेगा। मोदी की सफलता का रहस्य विभाजित विपक्ष है। जब तक ऐसा चलता रहेगा, मोदी जीतते रहेंगे। विपक्ष को एनडीए से मुकाबला करने के लिए और अधिक एकताबद्ध होना होगा।

अपने कामों पर वोट क्यों नहीं मांगती भाजपा

आगामी आम चुनावों में भाजपा ने अपने लिए 370 से अधिक सीटें और एनडीए के लिए 4 सौ से अधिक सीटें लाने का लक्ष्य रखा है

महिलाओं को निशाने पर लेने का सिलसिला आज का नहीं बरसों पुराना है। और यह किसी एक पार्टी की महिलाओं के साथ नहीं होता, सभी के साथ होता है। क्योंकि यहां समस्या समाज की मानसिकता में है, जिसमें यह बात गहरे तक धंसी हुई है कि महिलाओं को पुरुषों के बराबर नहीं रखा जा सकता। इस मानसिकता से बहुसंख्यक लोग ग्रसित हैं। केवल राहुल गांधी जैसे कुछेक अपवाद हैं, जो महिलाओं के साथ इतने सम्मान से पेश आते हैं । आगामी आम चुनावों में भाजपा ने अपने लिए 370 से अधिक सीटें और एनडीए के लिए 4 सौ से अधिक सीटें लाने का लक्ष्य रखा है। 10 साल सत्ता में पूर्ण बहुमत के साथ रहने वाली पार्टी के लिए यह कोई असंभाव्य लक्ष्य नहीं है, क्योंकि अपने दो–दो कार्यकाल में किए गए कार्यों के आधार पर ही भाजपा जनता से अपने लिए पहले से अधिक सीटें और बड़ी जीत मांग सकती है। लेकिन भाजपा अपने कार्यों को गिनाने से अधिक विपक्ष पर प्रहार करके जीत हासिल करने की जुगत में है। शायद उसे अपनी उपलब्धियों के दम पर जीत हासिल करने का विश्वास नहीं है। झूठे विज्ञापन, विपक्ष की एकता का मखौल उड़ाने वाले प्रचार और भावनात्मक मुद्दों के इर्द–गिर्द भाजपा रणनीति बना रही है। कंगना रनौत प्रकरण से लेकर दूल्हा कौन होगा जैसे विज्ञापन इसकी मिसाल हैं।

2004 से 2014 तक यूपीए ने दस साल देश पर शासन किया था। लेकिन 2014 के चुनावों के वक्त यूपीए के लिए लोकविरोधी लहर चली थी। इसकी तैयारी 2011 के अन्ना आंदोलन से ही शुरु हो गई थी। जिसका नतीजा यह हुआ कि मनरेगा, सूचना का अधिकार, भोजन का अधिकार, शिक्षा का अधिकार ऐसे कई क्रांतिकारी फैसलों के बावजूद कांग्रेस के विरोध में माहौल बना दिया गया और इससे पहले कि कांग्रेस अपने कार्यों के आधार पर वोट मांगती, भाजपा ने नरेन्द्र मोदी को आगे करके अच्छे दिनों का नारा बुलंद किया। महंगाई डायन भागेगी, हर खाते में 15 लाख रूपए आएंगे, क्योंकि काला धन वापस आएगा, युवाओं को 2 करोड़ रोजगार हर साल मिलेंगे, बुलेट ट्रेन चलेगी, ऐसे कई आकाशकुसुम भाजपा ने देश के सियासी पर्दे पर बिखरा दिए, जिन्हें देखने में मगन जनता ने भाजपा को भर–भर के वोट दिए। 2014 के पहले केवल अन्ना हजारे ही नहीं, योग गुरु रामदेव, आर्ट ऑफ लिविंग सिखाने वाले रविशंकर जैसे लोगों ने भी कांग्रेस के खिलाफ खूब माहौल बनाया। कई प्रेस वार्ताएं करके बताया कि भ्रष्टाचार से लेकर पेट्रोल–डीजल के दाम और रूपए की कीमत तक सबमें भाजपा की सत्ता आने से कैसे सुधार हो सकता है। इससे पहले कि कांग्रेस अपने कामों के आधार पर वोट मांगती, भाजपा और संघ के सहयोगियों ने कांग्रेस को आभासी मुद्दों में घेर कर सत्ता से बाहर करवा दिया।

2019 के चुनाव में कांग्रेस ने फिर सत्ता में लौटने की तैयारी की। राफेल लड़ाकू विमानों के सौदों में हुई बड़ी गड़बड़ी की ओर कांग्रेस ने देश का ध्यान दिलाया। इसके साथ ही यह भी बताया कि मोदी सरकार ने 5 सालों में एक भी वादा पूरा नहीं किया है। न युवाओं को रोजगार मिला, न किसी के खाते में 15 लाख आए, लेकिन जनता तक कांग्रेस का संदेश न पहुंचे, इसकी तैयारी भी भाजपा ने कर ली थी। भाजपा ने मीडिया को अपने नियंत्रण में कर ही लिया था, इसके अलावा पुलवामा हमले के बाद राष्ट्रवाद की नयी लहर उठा दी गई, जिसमें रोजगार, महंगाई और भ्रष्टाचार के सारे मुद्दे उड़ गए और भाजपा को फिर सत्ता में आने का मौका मिला।

अब 2024 में फिर जनता के बीच भाजपा को वोट मांगने पहुंचना है। इस बार राम मंदिर के उद्घाटन पर भाजपा वोट मांग सकती थी, लेकिन यह मुद्दा महीना भर भी असर नहीं दिखा सका। फरवरी में चुनावी बॉन्ड पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया और धार्मिक भावनाओं पर भ्रष्टाचार का मुद्दा हावी हो गया। ईडी और सीबीआई जैसी जांच एजेंसियों को किस तरह कारोबारियों पर दबाव बनाने के लिए इस्तेमाल में लिया गया और कैसे बड़ी कंपनियों ने चुनावी बॉन्ड के जरिए हजारों करोड़ रूपए भाजपा को चंदे के तौर पर दिए हैं, इसके प्रमाण अब सामने हैं। अर्थशास्त्री इसे देश ही नहीं दुनिया का सबसे बड़ा घोटाला बता रहे हैं। जाहिर है भाजपा के लिए चुनावी बॉन्ड एक बड़ी उलझन बन चुका है और इस बार कोई धार्मिक या राष्ट्रवादी लहर इस उलझन से उसे निकाल नहीं सकती। अपने बचाव के लिए अब भाजपा दर्शकों को गुमराह करने वाले विज्ञापनों को प्रसारित कर रही है। भाजपा ने पहले यूपीए सरकार के वक्त हुए 2जी घोटाले पर विज्ञापन बनाया, जबकि अदालत में 2जी घोटाले पर कांग्रेस को क्लीन चिट मिल चुकी है। इसके बाद यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध रुकवाकर भारतीय छात्रों को लाने वाला विज्ञापन जारी किया गया। इसमें भी भाजपा का झूठ सामने आ गया। क्योंकि खुद विदेश मंत्रालय ने इसकी पुष्टि की है कि श्री मोदी ने रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध नहीं रुकवाया है और ये भ्रामक दावा है। अब भाजपा का एक और विज्ञापन सामने आया है, जो विवाह जैसी पवित्र संस्था पर आघात के समान है। इस विज्ञापन में भाजपा ने विपक्षी गठबंधन इंडिया पर प्रहार किया है। विज्ञापन में दिखाया गया है कि दुल्हन बनी एक युवती वर पक्ष से पूछ रही है कि दूल्हा कौन है। जिन किरदारों को विज्ञापन में दिखाया गया है, वे राहुल गांधी, सोनिया गांधी, लालू प्रसाद, तेजस्वी यादव, अखिलेश यादव, मल्लिकार्जुन खड़गे, एम के स्टालिन और ममता बनर्जी की तरह दिख रहे हैं। इसमें राहुल गांधी जैसे लगने वाले किरदार को केंद्र में दिखाया गया है, जो खुद के दूल्हा होने की बात कह रहा है, लेकिन इस बीच बाकी किरदार भी आपस में झगड़ रहे हैं और दुल्हन बनी युवती उन सबको हैरान–परेशान सी देख रही है कि ऐसे में किस तरह वो विवाह करे और किससे करे। इस विज्ञापन के आखिर में भाजपा ने सवाल उठाया है कि दूल्हा नहीं चुन सकते तो प्रधानमंत्री कैसे चुनेंगे।

भाजपा ने इस विज्ञापन के जरिए लोकतंत्र में चालाकी से कथानक बदलने की कोशिश की है। क्योंकि लोकतंत्र में जनता अपने–अपने संसदीय क्षेत्र के प्रतिनिधियों को चुनती है, फिर बहुमत हासिल करने वाली पार्टी या गठबंधन तय करता है कि उनका नेता कौन होगा। जनता को सीधे प्रधानमंत्री चुनने की जरूरत नहीं है। लेकिन भाजपा यही बताने की कोशिश कर रही है कि हमारी पार्टी को बहुमत मिलेगा तो नरेन्द्र मोदी ही प्रधानमंत्री बनेंगे, लेकिन इंडिया गठबंधन को बहुमत मिलेगा तो उनके पास कोई प्रधानमंत्री का चेहरा ही नहीं है। यह कमोबेश वही रणनीति है, जिसके तहत भाजपा ने पिछले कुछ बरसों में एक सवाल खड़ा किया है कि मोदी नहीं तो कौन। जबकि भारतीय लोकतंत्र व्यक्ति केन्द्रित न होकर पार्टी आधारित व्यवस्था पर चलता है। मोदी नहीं तो कौन जैसे सवाल लोकतंत्र के पाठ्यक्रम में हैं ही नहीं, लेकिन भाजपा ने इसे ही सबसे अहम सवाल बना दिया है और अब दूल्हा वाला विज्ञापन उसी का विस्तार है। जब इंडिया गठबंधन की नींव पड़ी थी, तब लालू प्रसाद यादव ने राहुल गांधी को दूल्हा बनने की सलाह दी थी, संभवतः इसी को ध्यान में रखकर भाजपा ने यह विज्ञापन बनाया है। लेकिन ऐसा करने में उसने विवाह नामक संस्था का जिस तरह मखौल उड़ाया है, वह न परंपरा और संस्कृति के अनुकूल है, न लोकतंत्र के लिहाज से सही है।

विज्ञापनों के अलावा भाजपा अब उन मुद्दों को भी भुनाने में लगी है, जिनसे उसे सहानुभूति मिल सके। फिल्म अभिनेत्री कंगना रानौत को हिमाचल प्रदेश के मंडी से उम्मीदवार बनाए जाने पर कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत के सोशल मीडिया एकाउंट्स से कुछ भद्दी टिप्पणियां की गईं, जिनकी जानकारी होते ही सुप्रिया श्रीनेत ने उन्हें हटा लिया और साथ ही सफाई दे दी कि उनके एकाउंट्स को कुछ और लोग भी संभालते हैं और उन्हीं में से शायद किसी ने ऐसा किया है, लेकिन उनके विचार ऐसे बिल्कुल नहीं हैं। लेकिन भाजपा ने इस मामले को लपक लिया और बात महिला आयोग से लेकर चुनाव आयोग तक पहुंच गई। किसी भी महिला पर बेहूदी टिप्पणी हर लिहाज से गलत है और इसका बचाव किसी तरह नहीं किया जा सकता।

आम चुनाव 2024 भारत में फासीवाद के आगमन के खिलाफ एक ऐतिहासिक लड़ाई

इंडिया गुट और वे सभी जो भारतीय संविधान और देश में जीवंत लोकतंत्र के कामकाज की परवाह करते हैं

इंडिया गुट और वे सभी जो भारतीय संविधान और देश में जीवंत लोकतंत्र के कामकाज की परवाह करते हैं, उन्हें लोकसभा चुनावों में भाजपा और उसके सहयोगियों को हराने के लिए इस समय व्यापक एकता का निर्माण करना चाहिए। इसमें देर करने की कोई गुंजाइश नहीं है। संयुक्त विपक्ष की ओर से कोई भी गलत कदम या गलत निर्णय भारत में जीवंत लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली के भाग्य पर मुहर लगा देगा। 4 जून के नतीजों से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि लोकतंत्र कायम रहे और अधिनायकवाद को बड़ा झटका लगे। इस साल 19 अप्रैल से 1 जून तक सात चरणों में होने वाले 18वें लोकसभा चुनाव ने 1951–52 में पहले लोकसभा चुनाव के आयोजन के बाद से भारत में संसदीय लोकतंत्र के पिछले 73 वर्षों के कामकाज में ऐतिहासिक महत्व प्राप्त कर लिया है। पिछले दस वर्षों में नरेंद्र मोदी सरकार ने भारतीय संविधान के मूल आधार को नष्ट कर दिया है और विपक्ष–मुक्त लोकसभा चुनावों की सुविधा के लिए अपने अधिनायकवाद को बढ़ाया है। इस श्रृंखला में नवीनतम है लोकसभा चुनाव से ठीक दो महीने पहले दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की प्रवर्तन निदेशालय द्वारा एक पुराने आरोप में गिरफ्तारी और मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस के बैंक खातों के संचालन पर रोग लगाना।आयकर विभाग ने ऐसे समय में कांग्रेस के बैंक खातों के संचालन पर रोक लगाई है जब वह सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा, जिसके पास भारी मात्रा में धन है, के खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए वित्त की व्यवस्था करने के लिए कठिन संघर्ष कर रही है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सार्वजनिक तौर पर कांग्रेस मुक्त भारत की बात कही थी। अब वह खुले तौर पर विपक्ष मुक्त चुनाव के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, लेकिन पिछले पांच वर्षों में उनकी सरकार के कार्यों के कारण केंद्र में सत्तारूढ़ दल भाजपा और उसके विरोधी दलों के बीच समान अवसर खत्म हो गये हैं। फासीवादी राज्य के उभरने के ये चेतावनी संकेत हैं और अगर 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा तीसरी बार केंद्र में सत्ता हासिल करती है तो यह प्रक्रिया तेज हो जायेगी। इस तरह, आने वाले चुनावों ने विपक्षी इंडिया गुट और समाज की अन्य सभी ताकतों, जो भारत में सत्तावाद और लोकतंत्र के क्षरण के खिलाफ हैं, के लिए एक बड़ी चुनौती पेश की है।

2019 के लोकसभा चुनाव के बाद पहली बार तृणमूल कांग्रेस की सदस्य बनीं महुआ मोइत्रा ने अपने संबोधन में फासीवाद के सात चेतावनी संकेतों का जिक्र किया था, जो उन्होंने अमेरिका के होलोकॉस्ट म्यूजियम में पढ़े थे। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूसरी बार बनी सरकार के शासन के तहत भारत में उन चेतावनी संकेतों के शुरुआती संकेतों का उल्लेख किया था। आज, 2024 के लोकसभा चुनावों की पूर्व संध्या पर, महुआ मोइत्रा के उस संबोधन के पांच साल बाद, संकेत कहीं अधिक स्पष्ट हैं। यह अधिनायकवाद का अंतिम चरण हो सकता है और जब तक इसे प्रभावी ढंग से नहीं रोका जाता, यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तीसरी बार के शासन के दौरान फासीवाद के पहले चरण का कारण बन सकता है।

होलोकॉस्ट संग्रहालय के पोस्टर में उल्लिखित पहला चेतावनी संकेत अति राष्ट्रवाद था जो देश को विभाजित करता है। महुआ ने 2019 में उल्लेख किया था कि कैसे हाल ही में पारित सीएए आबादी के एक वर्ग के बीच आतंक पैदा कर रहा है। पांच साल बाद, सीएए प्रावधानों को कार्यान्वयन के लिए अधिसूचित किया गया है और दस्तावेजों की कमी के कारण अल्पसंख्यकों के एक अच्छे वर्ग की नागरिकता खोने की एक बड़ी संभावना है। बंगाल में एक युवक ने आवश्यक कागजात नहीं मिलने के कारण आत्महत्या कर ली। असम के मुख्यमंत्री हिमंतविश्व शर्मा ने नये मानदंडों की घोषणा की है जिसके तहत अल्पसंख्यक लोग उनके राज्य में रह सकते हैं। यह पूरा कदम देश को बांटने का है, जोड़ने का नहीं।

दूसरा लक्षण मानवाधिकारों का तिरस्कार है। प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में यह बहुत मुखर नहीं था, लेकिन नरेंद्र मोदी के दूसरे कार्यकाल में, मानवाधिकारों के लिए लड़ने वाले गैर सरकारी संगठनों को हर संभव तरीके से परेशान किया गया है, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया है, और सत्ताधारी दल की नीतियों के खिलाफ किसी भी असंतोष को राष्ट्रविरोधी माना जा रहा है। केंद्र में शासन एक आयामी है जिसमें किसी भी भिन्न विचार की कोई गुंजाइश नहीं है। विरोधी विचारों का तिरस्कार किया जा रहा है। यह एक राय, एक पार्टी, एक सरकार की तरह है। उत्तर प्रदेश एक विशिष्ट मामला है जहां संघ परिवार के सीमांत तत्वों द्वारा अल्पसंख्यकों पर कोई भी अत्याचार जारी रखा जा सकता है और बहुत कम सरकारी कार्रवाई होती है। राज्य सरकार द्वारा ही मुसलमानों के साथ दोयम दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार किया जाता है।

फासीवाद का तीसरा प्रारंभिक संकेत सत्तारूढ़ दल का अपने मित्रवत व्यावसायिक घरानों के माध्यम से जनसंचार माध्यमों पर पूर्ण नियंत्रण है। महुआ ने अपने 2019 के भाषण में रुझानों का उल्लेख किया था, लेकिन अब, राष्ट्रीय मीडिया, प्रिंट और टीवी दोनों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुकूल समूहों का पूरी तरह से वर्चस्व है। ऐसा कोई रास्ता नहीं है, जिससे समाचार रिपोर्टिंग स्वतंत्र रह सके। वर्तमान डिजिटल सूचना युग में, वर्तमान सरकार का विरोध करने वाले किसी भी समाचार पोर्टल को दंडित करने के लिए कानूनों में संशोधन किया गया है। लोकसभा चुनाव की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय मीडिया में शायद ही विपक्ष के लिए कोई जगह है। चौथा संकेत यह है कि राष्ट्रीय सुरक्षा का जुनून है– दुश्मनों की पहचान। एनआईए अब एक सुपर विशाल एजेंसी है। संगठन किसी भी असंतुष्ट पर छापा मार सकता है और उस पर राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का आरोप लगा सकता है। प्रधानमंत्री के नाम पर सेना की उपलब्धियां हड़पी जा रही हैं।

कई सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी सत्तारूढ़ दल के अनुकूल सेना की गतिविधियों को शामिल करने की केंद्र की कोशिश से चिंतित हैं। वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों में सेवानिवृत्ति से पहले सत्तारूढ़ दल के साथ मेलजोल बढ़ाने की प्रवृत्ति होती है। हाल ही में एक सेवानिवृत्त वायु सेना प्रमुख भाजपा में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि मोदी शासन के पिछले दस साल पेशेवर तौर पर उनके लिए सबसे अच्छे रहे। इस तरह से सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारियों को सत्तारूढ़ दल के साथ शामिल करना एक खतरनाक प्रवृत्ति है। पांचवां संकेत यह है कि इस देश में अब सरकार और धर्म एक–दूसरे से जुड़ गये हैं, जिसका महुआ ने अपने 2019 के भाषण में शुरुआती रुझान का ही जिक्र किया था। लेकिन अब कोई पर्दा नहीं है। धर्म को सत्ताधारी सरकार से जोड़ने की बात पूरी हो गई है। इस साल 22 जनवरी को, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जो सभी धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाले देश के 140 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, ने राम मंदिर का उद्घाटन किया जो 100प्रतिशत धार्मिक मामला था। तब से यह सिलसिला जारी है। भाजपा के वरिष्ठ नेता खुले तौर पर कह रहे हैं कि एक बार जब वे अच्छे बहुमत से लोकसभा चुनाव जीत जायेंगे, तो भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए संविधान में संशोधन किया जायेगा जो संघ परिवार का अंतिम लक्ष्य है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखनाथ मंदिर में मनाई होली

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को गोरखपुर में गोरखनाथ मंदिर में होली मनाई। इस अवसर पर उन्होंने कहा, ''पिछले कई दिनों से देशभर के सनातन धर्म के अनुयायी होली जैसे त्योहार के जरिए अपनी 1000 साल की विरासत को आनंद और उत्साह की नई ऊंचाई पर ले जाकर इस त्योहार में हिस्सा ले रहे हैं। वे अपनी विरासत के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। इस अवसर पर हम इस शोभा यात्रा के माध्यम से समाज के हर वर्ग के लोगों को अपने उत्साह से जोड़कर समृद्ध समाज की स्थापना का संदेश देते हैं.. . सनातन धर्म 'वसुधैव कुटुंबकम' में विश्वास करता है।''

सीएम योगी ने एक्स पर तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा, ''यह होली विशेष है, यह होली दिव्य है, यह होली भव्य है। प्रभु श्री रामलला के अपने भव्य मंदिर में पुनः विराजमान होने के उपरांत विश्व भर में सनातन धर्म के अनुयायी अपनी पहली होली मना रहे हैं। सभी को रंगोत्सव की ढेरों शुभकामनाएं।''

सीएम योगी ने मंगलवार को गोरखनाथ में होली मनाई। सीएम ने कहा पिछले कई दिनों से देशभर के सनातन धर्म के अनुयायी होली जैसे त्योहार के जरिए अपनी 1000 साल की विरासत को आनंद और उत्साह की नई ऊंचाई पर ले जाकर इस त्योहार में हिस्सा ले रहे हैं। वे अपनी विरासत के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पुल से गिरकर दो लोगों की मौत, सूर्यकुंड व चौरी चौरा ओवरब्रिज से गिरे दो युवक

संवाददाता, गोरखपुर। सूर्यकुंड ओवरब्रिज से सोमवार की दोपहर तेज रफ्तार बाइक सवार अनियंत्रित होकर नीचे गिर गया। स्थानीय लोगों की मदद से तिवारीपुर थाना पुलिस जिला अस्पताल ले गई, जहां डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया। वहीं चौरी चौरा ओवरब्रिज पर शाम को बाइक की चपेट में आया साइकिल सवार पुल से नीचे गिर गया। सिर में गंभीर चोट लगने से मृत्यु हो गई। महराजगंज जिले के श्यामदेउरवा थाना क्षेत्र स्थित सुभवल गांव के 40 वर्षीय उमेश पत्नी मनीता, बेटे सुनील, बेटी शालू व नेहा के साथ चिलुआताल थाना क्षेत्र के करीमनगर में किराये पर कमरा लेकर रहते थे। तिवारीपुर इलाके में उनकी मौसी रहती हैं। सोमवार की सुबह मौसी की बेटी का निधन हो गया था।

पड़ोसी की बाइक लेकर वह अंतिम संस्कार में शामिल होने गए थे। लौटते समय दोपहर 12:30 बजे सूर्यकुंड ओवरब्रिज पर तेज रफ्तार बाइक रेलिंग से टकरा गई। बाइक अनियंत्रित होकर पुल पर गिर गई जबकि उमेश नीचे गिर गए। सिर में गंभीर चोट लगने से उनकी मृत्यु हो गई। पुलिस ने बाइक नम्बर के आधार पर गाड़ी मालिक से सम्पर्क किया, तब उमेश की पहचान हुई।

मुंडेरा बाजार संवाददाता के अनुसार झंगहा के परसौनी गांव में रहने वाले 45 वर्षीय रामरक्षा पासवान सोमवार की दोपहर में साइकिल से चौरी चौरा आए थे। शाम को घर लौटते समय चौरी चौरा में निविहवा ओवरब्रिज के पास बाइक सवार ने पीछे से ठोकर मार दी। ओवरब्रिज से नीचे गिरे रामरक्षा के सिर में गंभीर चोट लग गई। स्थानीय लोगों की मदद से पुलिस सीएचसी चौरी चौरा ले गई जहां डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

सूर्यकुंड ओवरब्रिज से सोमवार की दोपहर तेज रफ्तार बाइक सवार अनियंत्रित होकर नीचे गिर गया। स्थानीय लोगों की मदद से तिवारीपुर थाना पुलिस जिला अस्पताल ले गई जहां डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया। वहीं चौरी चौरा ओवरब्रिज पर शाम को बाइक की चपेट में आया साइकिल सवार पुल से नीचे गिर गया। सिर में गंभीर चोट लगने से मृत्यु हो गई।

गोरखपुर बाल संप्रेक्षण गृह में पड़ा छापा तो मचा हड़कंप

पुलिस ने बरामद की ऐसी चीज जानकर हो जाएंगे हैरान

जिला जज के नेतृत्व में पुलिस और प्रशासन के एक–एक अधिकारी हर माह बाल संप्रेक्षण गृह का निरीक्षण करते हैं। इसके बाद भी बच्चों के पास अवैध रूप से मोबाइल फोन समेत अन्य सामान के पहुंचने पर लगाम नहल् लग पा रहा है। 27 मार्च 2023 को टीम के निरीक्षण के दौरान 25 मोबाइल फोन बरामद हुए थे।

संवाददाता, गोरखपुर। सूर्यकुंड स्थित बाल संप्रेक्षण गृह रह रहे बच्चों के पास वहां कार्यरत चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी मोबाइल फोन पहुंचाता है। बुधवार को जनपद न्यायाधीश तेज प्रताप तिवारी, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट आदर्श श्रीवास्तव और पुलिस अधीक्षक नगर कृष्ण कुमार बिश्नोई ने छापेमारी एक बार फिर दो मोबाइल फोन व चार्जर बरामद हुए। जांच में कर्मचारी की संलिप्तता पाई गई है। एसपी सिटी ने बताया कि जांच टीम जल्द ही कर्मचारी के विरुद्ध कार्रवाई करेगी।

जिला जज के नेतृत्व में पुलिस और प्रशासन के एक–एक अधिकारी हर माह बाल संप्रेक्षण गृह का निरीक्षण करते हैं। इसके बाद भी बच्चों के पास अवैध रूप से मोबाइल फोन समेत अन्य सामान के पहुंचने पर लगाम नहीं लग पा रहा है। 27 मार्च 2023 को टीम के निरीक्षण के दौरान 25 मोबाइल फोन बरामद हुए थे।

इस पर जिला जज ने वहां की व्यवस्था पर असंतोष व्यक्त करते हुए जिम्मेदारों से सवाल जबाब किए तो संप्रेक्षण गृह के अधीक्षक बगले झांगने लगे थे। फटकार के बाद कुछ दिनों तक फोन समेत अन्य पर प्रतिबंध रहा लेकिन एक बार फिर मोबाइल फोन व अन्य सामान बरामद होने लगे हैं।

23 मार्च 2023 को भी मिले थे मोबाइल फोन

जिला जज ने 23 मार्च, 2023 को भी पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों के साथ बाल संप्रेक्षण गृह का निरीक्षण किया था। इस दौरान बाल अपचारियों के पास से 22 मोबाइल फोन, चार्जर, बैटरी, ईयरफोन और गुटखा बरामद हुए। जिला जज के निर्देश पर तिवारीपुर थाना पुलिस ने बरामद हुए सामान को कब्जे में लिया था। एडीएम सिटी ने दोषियों पर कार्रवाई के लिए शासन को रिपोर्ट भेजी थी।

बिजली के बोर्ड से बरामद हुए थे मोबाइल फोन

जज के साथ पहुंचे अधिकारियों ने जब जांच की तो बाल आपचारियों ने आलमारी, बिस्तर के साथ बिजली के बोर्ड के अंदर मोबाइल फोन छिपाकर रखे थे। अधिकारियों ने बाल संप्रेक्षण गृह में लगे बिजली के एक–एक बोर्ड को खुलवाकर उसमें से तीन–तीन, चार–चार मोबाइल फोन बरामद किया था। इस दौरान 25 मोबाइल फोन बरामद किए गए थे।

चुनावी मुद्दा: गोंडा में पैनी है मुद्दों की धार

साल–दर–साल इंतजार के बाद भी कुछ नहीं हो पाया, एक रिपोर्ट

लखनऊ,संवाददाता। गोंडा जिला कई धरोहरों और स्वाधीनता सेनानियों की यादों को समेटे हुए है। कई मुद्दे हैं जो धरातल पर हैं। हालांकि, लंबे इंतजार के बाद भी यहां के लोग सुविधाओं से वंचित हैं। चुनाव में मुद्दों को लेकर मैदान में उतरने वाले महारथियों की इस बार भी अग्निपरीक्षा है। गोंडा लोकसभा क्षेत्र में तमाम ऐसे मुद्दे हैं जिन पर साल–दर–साल कुछ नहीं हो पाया। नतीजा, जस का तस है। यहां मुद्दों की धार पैनी है। वादे होते हैं, लेकिन चुनाव बाद उसे निभाने की रफ्तार धीमी हो जाती है।

गोंडा कई ऐतिहासिक विरासत संजोए हुए है। महाभारत काल में पृथ्वीनाथ मंदिर में स्थापित शिवलिंग को एशिया के सबसे बड़े शिवलिंग का गौरव प्राप्त है। यहां छपिया का श्रीस्वामीनारायण मंदिर का मनमोहनी दृश्य सर्वविदित है। राजा देवीबक्श सिंह वीर योद्धा व देशभक्त भी यहां हुए, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेजों के साथ लड़ते–लड़ते अपने जीवन के साथ ही परिवार को भी न्योछावर कर दिया। उनका बनवाया हुआ सागर तालाब आज भी नगर की शोभा बढ़ा रहा है।

जिले का कुल क्षेत्रफल 4003 वर्ग किलोमीटर है। 1214 गांव वाले गोंडा में 17 पुलिस स्टेशन और 16 ब्लॉक और चार तहसीलें हैं। गौरा, गोंडा, मनकापुर, मेहनौन व उतरौला विधानसभा क्षेत्र हैं। मंडल मुख्यालय होने के बाद भी लोग सुविधाओं से वंचित हैं। राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज की बात हो या फिर लेखपाल ट्रेनिंग सेंटर, बड़ी परियोजनाओं का काम अधूरा है। सड़क, परिवहन, विकास सभी को लेकर मतदाता टकटकी लगाए हैं। मुद्दे बड़े हैं, इन्हें अमलीजामा पहनाने वाले की तलाश है।संवाद

ये मुद्दे भी खास हैं

– आठ साल से बन रहा राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज अधूरा
– 16 साल से लटका पड़ा है लेखपाल ट्रेनिंग सेंटर का निर्माण
– गतिशील नहीं हो पाई क्षेत्रीय विधि विज्ञान प्रयोगशाला
– राजकीय महाविद्यालय में सुविधाओं का अभाव
– बभनजोत में आईटीआई व सद्भाव मंडप निर्माण
– 300 शैया का मंडलीय चिकित्सालय
– कूड़ा निस्तारण के लिए एमआरएफ सेंटर

ओवरब्रिज निर्माण

– मनकापुर, नवाबगंज, करनैलगंज, सुभागपुर व मसकनवा में रेलवे क्रॉसिंग पर लंबे जाम की समस्या 24 घंटे बनी रहती है। इसलिए यहां पर फ्लाईओवर का निर्माण सबसे ज्यादा जरूरी है। जनप्रतिनिधियों को इस मुद्दे की तरफ ध्यान देने की जरूरत है।

हाथ आते–आते फिसला विश्वविद्यालय

– देवीपाटन मंडल मुख्यालय पर विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा खुद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने की थी। इसके लिए परसपुर ब्लॉक के डोमाकल्पी गांव में जमीन भी चिह्नित की गई, लेकिन विश्वविद्यालय बलरामपुर जिले की झोली में चला गया।

मंडलस्तरीय रोडवेज बस अड्डा

– गोंडा में मंडलस्तरीय बसअड्डा बनाने को जमीन नहीं मिल पाई। शासन से निर्देश मिले उस पर कार्रवाई भी शुरू हुई, लेकिन जमीन न मिलने की बात को लेकर यात्रियों को राहत देने की यह योजना लंबित है। शहर के बीच में स्थापित रोडवेज बस स्टेशन में जगह का अभाव है।

सीवर लाइन और नगरीय सीमा का विस्तार

– गोंडा नगर निकाय में सीवर लाइन की योजना करीब दस साल पहले बनी थी। शासन स्तर पर लिखापढ़ी की गई, लेकिन अब इसका कुछ पता नहीं है। इस कारण लोग जलनिकासी की समस्या से जूझ रहे हैं।

– नगर की सीमा से सटे 22 गांवों को नगर पालिका परिषद गोंडा में शामिल करने की योजना भी लंबित है। गांवों को नगर में शामिल कराने के लिए प्रयास किए गए, लेकिन सफलता नहीं मिल पाई।

रिंग रोड का सपना

– शहर में जाम से मुक्त करने के उद्देश्य से रिंगरोड बनाने का खाका तैयार किया गया। बालपुर से कटहाघाट होते हुए पराग डेयरी और इसे आगे बढ़ाते हुए बलरामपुर रोड में मिलाकर गोंडा बहराइच मार्ग से फिर गोंडा लखनऊ मार्ग को जोड़ने की योजना अधर में है। उद्योग का हाल : जिले में उद्योग के नाम पर सिर्फ मनकापुर आईटीआई लिमिटेड है। वह भी धनाभाव से जूझ रही है। जिले में चार चीनी मिले हैं। इसके अलावा उद्योग के नाम पर यहां कुछ नहीं है, जिससे स्थानीय लोगों को दूसरे राज्यों में जाना पड़ रहा है। उद्योगों की स्थापना से पलायन रुक सकता है तो विकास को भी पंख लग सकते हैं, लेकिन उद्योगों की स्थापना में रुचि नहीं ली गई। व्यापारी ट्रांसपोर्टनगर स्थापित करने की मांग अरसे कर रहे हैं, लेकिन उनकी भी मांग पूरी नहीं हुई।

वरुण गांधी का भावुक पत्र

बरेली,संवाददाता। पीलीभीत से 35 साल का सियासी रिश्ता टूटने पर वरुण गांधी पहली प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने पीलीभीत की जनता के नाम भावुक पत्र लिखकर आभार जताया। कहा कि मेरा पीलीभीत से रिश्ता राजनीतिक गुणा–भाग से बहुत ऊपर है। पीलीभीत से मेनका गांधी और उनके बेटे वरुण गांधी का पिछले 35 साल से चला आ रहा सियासी रिश्ता बुधवार को खत्म हो गया। 1989 के बाद यह पहली बार हुआ कि जब दोनों में से किसी ने भी पीलीभीत सीट से पर्चा नहीं भरा। भाजपा ने वरुण गांधी का टिकट काटकर यूपी के कैबिनेट मंत्री जितिन प्रसाद को प्रत्याशी बनाया है। पीलीभीत से सियासी रिश्ता टूटने पर वरुण गांधी ने भावुक पत्र लिखा है। उन्होंने लिखा है कि मेरा और पीलीभीत का रिश्ता प्रेम और विश्वास का है, जो राजनीतिक गुणा–भाग से बहुत ऊपर है।

वरुण गांधी ने पीलीभीत के लोगों को प्रणाम करते हुए लिखा, 'मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे वर्षों पीलीभीत की महान जनता की सेवा करने का मौका मिला। महज एक सांसद के तौर पर ही नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के तौर भी मेरी परवरिश और मेरे विकास में पीलीभीत में मिले आदर्श, सरलता, और सहृदयता का बहुत बड़ा योगदान है। आपको प्रतिनिधि होना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सम्मान रहा है और मैंने हमेशा अपनी पूरी क्षमता से आपके हितों के लिए आवाज उठाई है।'

बचपन की याद को किया साझा

आज जब मैं यह पत्र लिख रहा हूं, तो अनगिनत यादों ने मुझे भावुक कर दिया है। उन्होंने अपने बचपन की यादों को साझा करते हुए लिखा, मुझे वो तीन साल का छोटा सा बच्चा याद आ रहा है, जो अपनी मां की अंगुली पकड़कर 1983 में पहली बार पीलीभीत आया था, उसे कहां पता था कि एक दिन यह धरती उसकी कर्मभूमि और यहां के लोग उसका परिवार बन जाएंगे।

'...भले ही उसकी कोई भी कीमत चुकानी पड़े'

पत्र में आगे लिखा कि एक सांसद के तौर पर मेरा कार्यकाल भले समाप्त हो रहा हो, पर पीलीभीत से मेरा रिश्ता अंतिम सांस तक खत्म नहीं हो सकता। मैं राजनीति में आम आदमी की आवाज उठाने आया था और आज आपसे यही आशीर्वाद मांगता हूं कि सदैव यह कार्य करता रहूं, भले ही उसकी कोई भी कीमत चुकानी पड़े। उन्होंने पीलीभीत से अपने रिश्ते को सियासी गुणा–भाग से बहुत ऊपर बताया। अंत में लिखा– मैं आपका था, हूं और रहूंगा।

सवाल : संगठन में बड़ा पद या किसी दूसरी सीट से मिलेगा टिकट

वरुण गांधी की वजह से पीलीभीत प्रदेश में वीआईपी सीट बनी हुई है। 2009–2010 में वरुण भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव भी रह चुके हैं। चर्चा है कि पार्टी वरुण को संगठन में कोई बड़ा पद दे सकती है। चर्चा यह भी है कि वरुण को अवध क्षेत्र की किसी वीआईपी सीट से उतारा जा सकता है। यह सब कयास इसलिए लगाए जा रहे हैं कि वरुण ने टिकट कटने के बाद भी न तो भाजपा छोड़ी है और न ही ऐसा कोई संकेत दिया है।

वाराणसी,संवाददाता । लोकसभा चुनाव को लेकर सभी राजनीतिक दल अपने वोटरों को साधने में जुटे हैं। वहीं चुनाव का बिगुल बजने के साथ ही शासन–प्रशासन आचार संहिता के नियमों का पालन कराने में जुटे हैं। काशी और गोरखपुर क्षेत्र की पांच लोकसभा सीटें ऐसी हैं, जहां प्रत्याशी जीत की हैट्रिक लगाने के इरादे से उतर रहे हैं। इनमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नाम भी शामिल है। भाजपा ने उन्हें तीसरी बार वाराणसी लोकसभा सीट से प्रत्याशी बनाया है। इसी तरह दो लोकसभा सीटें ऐसी हैं, जहां से भाजपा प्रत्याशी तीन बार चुनाव जीत चुके हैं।

अब चौथी बार चुनाव मैदान में हैं। हालांकि जीत की हैट्रिक पर अंतिम मुहर मतदाताओं को ही लगाना है। यह दांव कितना कारगर होगा, यह चार जून को मतगणना के साथ ही साफ हो सकेगा। चंदौली लोकसभा सीट छोड़ दी जाए तो पिछले चुनाव में ज्यादातर प्रत्याशियों के जीत का अंतर एक लाख से ज्यादा था।

वाराणसी संसदीय सीट से तीसरी बार चुनाव मैदान में उतरे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 45.22 फीसदी वोटों के अंतर से चुनाव जीते थे, जो पूर्वांचल में जीत का सर्वाधिक अंतर था। भाजपा ने ज्यादातर प्रत्याशियों के नाम तय कर दिए हैं। अपना दल एस की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल का भी मिर्जापुर से तीसरी बार चुनाव लड़ना लगभग तय है।

महराजगंज: पंकज चौधरी नौवीं बार लड़ेंगे चुनाव, दूसरी बार हैट्रिक का मौका

पूर्वांचल की महराजगंज संसदीय सीट से भाजपा प्रत्याशी और केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी वैसे तो नौवीं बार चुनाव लड़ेंगे, लेकिन इस बार जीत की हैट्रिक लगाने का मौका है। वह 2014 और 2019 का लोकसभा चुनाव जीतकर संसद पहुंचे थे। इससे पहले 1991, 1996 और 1998 के लोकसभा चुनाव में जीत मिली थी। इसी संसदीय सीट से उन्हें 2004 के चुनाव में भी जीत मिली थी। हालांकि 1999 और 2009 के लोकसभा चुनाव में पंकज को हार का सामना करना पड़ा था। अब नौवीं बार चुनाव मैदान में हैं। उनके पास जीत की हैट्रिक लगाने का दूसरा मौका है।

चौथी बार चुनाव मैदान में कमलेश पासवान–जगदंबिका पाल

पूर्वांचल की बांसगांव सुरक्षित संसदीय सीट से भाजपा प्रत्याशी कमलेश पासवान चौथी बार चुनाव मैदान में हैं। 2019 के चुनाव में कमलेश ने जीत की हैट्रिक लगाई थी। इसी संसदीय सीट से कमलेश की मां सुभावती पासवान भी चुनाव जीत चुकी हैं। इसी तरह सिद्धार्थनगर की डुमरियागंज लोकसभा सीट से जगदंबिका पाल चौथी बार मैदान में हैं। 2009 में वह कांग्रेस के टिकट पर जीते थे। 2014 और 2019 का चुनाव भाजपा के टिकट पर जीते हैं। इस बार फिर चुनाव लड़ रहे हैं।

परिवारवाद की राजनीति पर बोले राजनाथ सिंह

कहा– यूपी विधानसभा चुनाव में बेटे को नहीं दिया था टिकट

वाराणसी,संवाददाता । राजनीति में परिवारवाद को लेकर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि परिवारवाद का आरोप न लगे, इसलिए उन्होंने अपने बेटे को टिकट नहीं दिया था। उनका बेटा इस बात से नाराज भी हुआ। हालांकि उनके बेटे पंकज सिंह वर्तमान में नोएडा से भाजपा विधायक हैं। राजनीतिक दल परिवारवाद को लेकर एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगाते रहते हैं। परिवारवाद को लेकर राजनाथ सिंह ने कहा कि वे परिवारवाद नहीं करते हैं। उन्होंने एक बार अपने बेटे पंकज सिंह को पार्टी का टिकट देने से इनकार कर दिया था, क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि उन पर परिवारवाद का प्रचार करने का आरोप लगाया जाए। हालांकि पंकज सिंह वर्तमान में नोएडा से भाजपा विधायक हैं।

टाइम नाउ समिट में बोलते हुए केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह ने 2007 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों का जिक्र किया। उस समय राजनाथ सिंह भाजपा अध्यक्ष थे। राजनाथ सिंह ने कहा, 'उस समय पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह और राजस्थान के वर्तमान राज्यपाल कलराज मिश्र मेरे पास आए और उन्होंने सुझाव दिया कि पंकज सिंह वाराणसी के एक विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ सकते हैं। उस समय मैं पार्टी का अध्यक्ष था और मैंने इनकार कर दिया।' राजनाथ सिंह ने कहा, 'मेरे पास बैठे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और पूर्व उपप्रधानमंत्री लाल कृष्ण एडवोकेट ने मुझसे अनुरोध किया, लेकिन मैंने दोनों नेताओं को मना कर दिया और कहा कि मैं अपने बेटे को अपने हाथों से टिकट नहीं दूंगा।' सिंह ने कहा, उनका बेटा भी इस बात से नाराज था कि उसे मेरा आशीर्वाद नहीं मिला। उन्होंने कहा कि पंकज घर आए और मेरे पैर छुए, मैंने उन्हें अपना आशीर्वाद नहीं दिया। वे बहुत दुखी थे और जाकर शिकायत भी की। परिवारवाद' की अवधारणा के बारे में और अधिक बताते हुए राजनाथ सिंह ने कहा, 'मान लीजिए कि मैं एक पार्टी का अध्यक्ष हूं और मेरी इच्छा है कि मेरे बाद मेरा बेटा इस पद को संभाले और बाद में उनका बेटा, इस हम परिवारवाद कहते हैं। पीएम मोदी सदन में वंशवाद की राजनीति को भी स्पष्ट किया, जिसमें उन्होंने कहा कि 'अगर एक परिवार के 8–9 लोग राजनीति में सक्रिय हैं, तो हम इसे परिवारवाद नहीं कह सकते हैं, लेकिन जब एक परिवार एक पार्टी चलाता है और एक परिवार को प्राथमिकता दी जाती है, तो वह' परिवारवाद है। इसका मतलब है कि पार्टी कुछ नहीं करती।

यूपी में भाजपा के लिए बड़ी चुनौतियां

पिछले चुनाव जैसा महागठबंधन नहीं, राम मंदिर निर्माण से फायदा, पर सवाल भी कई...

लखनऊ,संवाददाता। आगामी लोकसभा चुनाव में यूपी में भाजपा के लिए चुनौतियां भी कम नहीं है। 2014 और 2019 का प्रदर्शन अपनी जगह है। बेहतर परिणाम के लिए कड़ी मशक्कत करनी होगी। हारी और कम अंतर से जीती 20 से ज्यादा सीटों पर लड़ाई आसान नहीं है। विश्लेषक कहते हैं कि भाजपा यूपी में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2014 में कर चुकी है। अब सभी 80 सीटें जीत पाना तो दो पत्थरों के बीच दूब उगाने जैसा होगा। हालांकि, ऐसा करिश्मा आपातकाल के बाद हुए 1977 के आम चुनाव में हो चुका है। तब जनता पार्टी उस समय की सभी 85 सीटों पर अपना परचम फहराने में कामयाब हुई थी। सियासी पंडितों का तर्क है कि पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा 16 सीटें हार गई थी। उपचुनाव में आजमगढ़ और रामपुर दो सीटें जीतीं जरूर, लेकिन मुकाबला कड़ा रहा। सपा के गढ़ वाली मैनपुरी और कांग्रेस का किला रही रायबरेली दो ऐसी सीटें हैं, जो भाजपा के लिए चुनौतीपूर्ण रही हैं। पिछले चुनाव में हारी और कड़े मुकाबले वाली 20 से ज्यादा सीटों के हालात अब भी पिछले आमचुनाव से ज्यादा भिन्न नहीं हैं। उल्टा कई सीटों पर मोदी फैक्टर की जगह प्रत्याशी फैक्टर हावी है। अब तक घोषित 63 सीटों में से करीब 10 ऐसी हैं, जहां मतदाता इस बार भाजपा से नए चेहरे की उम्मीद कर रहा था। पर, पार्टी ने 'रामलहर' का प्रभाव मानकर पुराने को ही उतार दिया।

एक अन्य अहम बात

साल 2014 और 2017 के चुनाव की तरह तत्कालीन सरकार के खिलाफ वाला माहौल भी नहीं है। सरकार भाजपा की है। 2014 की तरह चतुष्कोणीय मुकाबला नहीं है। तब भाजपा–अपना दल, कांग्रेस–रालोद–महान दल गठबंधन के अलावा बसपा और सपा के बीच चतुष्कोणीय चौसर सजी थी। 2019 की तरह महागठबंधन जरूर सामने नहीं है, लेकिन त्रिकोण बनाने को मैदान में उतरी बसपा के पास पहले जैसे दमदार प्रत्याशी नजर नहीं आ रहे हैं।

दूसरा, 2019 में बसपा प्रदेश की 37 सीटों पर मैदान में नहीं थी। ऐसी सीटों पर अपवाद स्वरूप छोड़कर दलित वोट महागठबंधन के बजाय भाजपा की ओर शिफ्ट हो गया था, जिसकी वजह से भाजपा की सीटें 2014 की अपेक्षा घटने के बावजूद मत प्रतिशत बढ़ गया था।

तीसरा, इस चुनाव में सत्ताधारी दल के काम, व्यवहार और आचरण की भी लोग चर्चा कर रहे हैं। चुनाव कार्यक्रम के एलान के साथ ही अलग–अलग इलाकाई फैक्टर उभरने लगे हैं। एक और बड़ी बात–पिछले दो चुनावों में भाजपा की सीटें बढ़ने की जगह घटी हैं।

भाजपा 2014 की अपनी 71 सीटों की जगह 2019 में 62 सीटें और 2017 के विधानसभा चुनाव में मिलीं 312 सीटों के मुकाबले 2022 में 255 सीटें ही जीत सकी। ऐसा तब हुआ जब दोनों ही चुनाव राज्य व केंद्र की डबल इंजन सरकार के सत्ता में रहते हुए संपन्न हुए हैं।

एक बड़ी बात और... भाजपा कार्यकर्ता आजकल कहीं भी कहते मिल जाते हैं कि अब तो मंडल और जिलों से क्षेत्र तक के संगठन में काडर की जगह विधायकों, मंत्रियों और सांसदों के पिछलग्गू पदाधिकारियों के नाम गिनाए जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि ऐसे पदाधिकारी संगठन की शक्ति बढ़ाने की जगह अपने नेता की भक्ति में डूबे रहते हैं। इससे जमीनी कार्यकर्ता हताश हो रहे हैं। इन सबसे हटकर प्रचंड गर्मी में मतदाताओं को घर से निकालने की बड़ी चुनौती होगी। भाजपा के एक वरिष्ठ नेता कहते हैं कि हमारा वोटर पॉजिटिव फैक्टर जैसी धारणा में चुनाव तक पूरा माहौल बनाकर वोट के दिन घर बैठ जाता है। अयोध्या में विवादित ढांचा गिराए जाने के बाद यूपी सहित भाजपा की कई राज्य सरकारें बर्खास्त कर दी गईं।

बाद के चुनाव में बर्खास्तगी के खिलाफ ऐसा आक्रोश नजर आ रहा था कि जिससे लग रहा था कि दो तिहाई बहुमत से सरकार बनेगी। पर, हुआ उल्टा। दूसरा वाकया तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के समय का है। पहली बार केंद्र सरकार ने अपने काम पर वोट मांगने का साहस दिखाया था। अति उत्साह में चुनाव के लिए 'इंडिया शाइनिंग' का नारा दे दिया गया। चुनाव भर खूब उत्साह नजर आया। पर, नतीजे आए तो ढेर थे।

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के सारे जतन

2014 की सफलता से बेहतर प्रदर्शन के लिए पार्टी ने रणनीति और चुनाव प्रबंधन से लेकर आक्रामक प्रचार अभियान की जोरदार तैयारी की है। यह चुनाव के पहले से और अब प्रचार–अभियान की शुरुआत तक साफ–साफ नजर आ रहा है। चुनाव के ठीक पहले भाजपा ने श्रीराम मंदिर का निर्माण और भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा कर अपना सबसे बड़ा चुनावी वादा पूरा किया। इसे भाजपा 'जो कहा, सो किया' की तरह प्रचारित कर रही है। भाजपा इस माहौल को बनाए रखने के लिए पूरी ताकत से लगी हुई है। भाजपा सरकार वाले राज्यों के मुख्यमंत्री सहित उनकी कैबिनेट तक अयोध्या आकर दर्शन कर चुकी है। इससे उन राज्यों सहित यूपी में लगातार चर्चा और माहौल बना हुआ है। बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को अयोध्या लाकर दर्शन कराया गया है।

2019 की तरह विपक्ष में महागठबंधन नहीं है। सपा–कांग्रेस गठबंधन की वैसी मजबूत स्थिति नजर नहीं आ रही है जैसी सपा–बसपा–रालोद की मानी जाती थी।

बसपा अकेले चुनाव मैदान में है। इससे चुनाव त्रिकोणीय बनने के आसार बढ़ गए हैं। त्रिकोणीय मुकाबले में बसपा अपनी उम्मीद तलाश रही है, लेकिन सियासी पंडित इसे व्यापक स्तर पर भाजपा के लिए मुफीद मान रहे हैं। बसपा ने मुस्लिम प्रभाव वाली कई सीटों पर मुस्लिम प्रत्याशी देकर दूसरे विपक्षी दलों की बेचैनी बढ़ा दी है।

भाजपा ने हारी सीटों को जीतने के लिए खास रणनीति के हिसाब से काम किया है। पूर्वांचल में राजभर समाज के नेता ओम प्रकाश राजभर की सुभासपा व पश्चिम में जाट समाज के नेता जयंत चौधरी की पार्टी रालोद से भी हाथ मिला लिया है। दारा सिंह चौहान के भाजपा में आने से नोनिया–चौहान समाज के बीच समीकरण सुधरेगा। सुभासपा व रालोद राज्य सरकार का भी हिस्सा बन चुके हैं। 2014 में राजग ने 73 और 2019 में 64 सीट जीतने के बाद 2024 के लिए सभी 80 सीटों का टारगेट तय कर दिया है। भाजपा यह करिश्मा कर पाती है तो यह बड़ी बात होगी।

2019 में 16 हारी सीटें

गाजीपुर, घोसी, नगीना, सहारनपुर, बिजनौर, अमरोहा, अंबेडकरनगर, श्रावस्ती, लालगंज, जौनपुर, मैनपुरी, मुरादाबाद, संभल और रायबरेली।

रामपुर और आजमगढ़ भी हारी थीं लेकिन उप चुनाव में जीत लीं।

15,000 से कम वोट के अंतर से जीत वाली भाजपा की सीटें

मछलीशहर 181, मेरठ 4729, कन्नौज 12353, चंदौली 13959, सुल्तानपुर14526।

एक सीट बसपा जीती–श्रावस्ती–5320 वोट।

वोट शेयर बढ़ा, सीटें घटीं

लोकसभा कुल सीटें 80

वर्ष	सीटें	मत प्रतिशत
2014	71	42.32
2019	62	49.56

विधानसभा 403

वर्ष	सीटें	मत प्रतिशत
2017	312	41.57
2022	255	44.15

सख्ती संग समीकरणों का भी ध्यान

छवि को लेकर सजग भाजपा ने बाराबंकी के सांसद व घोषित प्रत्याशी से जुड़ा अश्लील वीडियो सामने आने के बाद उनका टिकट काट दिया। साथ ही जिस महिला नेता पर यह वीडियो वायरल कराने का शक था, उनके बजाय दूसरी महिला नेता को टिकट देकर ऐसी हरकतों से बाज आने का संदेश भी दिया।

सामाजिक और जातीय समीकरणों को ध्यान में रखते हुए दूसरे दलों के दिग्गज नेताओं को भाजपा में शामिल करने का सिलसिला जारी है। कांग्रेस के पूर्व सांसद राजेश मिश्रा, सपा के पूर्व सांसद देवेंद्र यादव, सपा सरकार में पूर्व मंत्री संजय गर्ग और बसपा के सिटिंग सांसद रितेश पांडेय व संगीता आजाद सहित बड़ी संख्या में अपने–अपने जिले व क्षेत्र में प्रभाव रखने वाले लोग शामिल किए जा रहे हैं। भाजपा ने सबसे ज्यादा प्रत्याशियों के टिकट घोषित कर दिए हैं और नामांकन सभाओं से ही माहौल बनाने का प्रयास शुरू कर दिया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी और दोनों डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य व ब्रजेश पाठक भाजपा व सहयोगी दलों के प्रत्याशियों के नामांकन सभा में शामिल हो रहे हैं।

भाजपा में पीएम नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा व यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ सहित स्टार प्रचारकों की लंबी फौज है। दूसरी ओर सपा की पूरी रणनीति अखिलेश यादव और बसपा की मायावती पर केंद्रित है। कांग्रेस सिर्फ 17 सीटों पर लड़ रही है और अपने प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को भी प्रत्याशी बना दिया है। राहुल–प्रियंका और मल्लिकार्जुन खरगे कितना समय दे पाते हैं, यह देखने वाली बात होगी।

कठिन सीटों के लिए खास प्रयास

कुछ कठिन सीटों के समीकरण साधने के लिए अलग से भी प्रयास नजर आ रहे हैं। मसलन, पूर्वांचल की पांच सीटें– आजमगढ़, लालगंज, घोसी, गाजीपुर और जौनपुर पार्टी हार गई थी। इनमें से उपचुनाव में आजमगढ़ को पार्टी जीत चुकी है। उपचुनाव के ही प्रत्याशी सपा से धर्मेंद यादव और भाजपा से दिनेश लाल यादव निरहुआ इस चुनाव में भी आमने–सामने हैं। लालगंज की बसपा सांसद संगीता आजाद भाजपा में शामिल हो गई हैं। पिछले चुनाव में इन्होंने ही भाजपा की नीलम सोनकर को हराया था। नीलम ही इस बार भी प्रत्याशी हैं। हारी हुई घोसी सीट सुभासपा को दी गई है।

जौनपुर सीट पर कांग्रेस के नेता रहे कृपाशंकर सिंह को टिकट दे दिया गया है। बाहुबली धनंजय सिंह के जेल जाने से पार्टी और भी राहत महसूस कर रही है। पार्टी को लगता है कि माफिया मुख्तार अंसारी और अतीक अहमद के समर्थकों के खिलाफ कार्रवाई से पूर्वांचल में अच्छा संदेश गया है। अवध में भाजपा अंबेडकरनगर और श्रावस्ती सीट हार गई थी। पार्टी ने अंबेडकरनगर से बसपा के सिटिंग सांसद रितेश पांडेय को शामिल कर टिकट दे दिया है। दूसरी ओर श्रावस्ती में दो स्थानीय ब्राह्मण नेताओं की आपसी प्रतिद्वंद्विता में नए हाई प्रोफाइल चेहरे के रूप में एमएलसी साकेत मिश्र को मैदान में उतारा है। साकेत काफी समय से क्षेत्र में सक्रिय थे। रायबरेली और अमेठी सीट से कांग्रेस की संभावनाएं तलाशने वाले कम नहीं हैं। भाजपा ने इन दोनों सीटों को लेकर ऐसी व्यूहरचना की है कि गांधी परिवार का कोई सदस्य यहां से मैदान में आने का निर्णय नहीं ले पा रहा है। सपा के दो विधायकों को अपने पाले में करके भाजपा ने सपा की सहयोगी कांग्रेस की उम्मीदों पर करारी चोट की है।

पिछले चुनाव में पश्चिम में भाजपा ने मेरठ सीट कम अंतर से जीती थी। सिटिंग सांसद का टिकट काटकर रामायण धारावाहिक में भगवान राम का किरदार निभाकर घर–घर सम्मान हासिल करने वाले फिल्म अभिनेता अरुण गोविल को उतारा गया है। पश्चिम की हारी हुई बिजनौर सीट सहयोगी रालोद को दे दी है।

रुहेलखंड में पीलीभीत सीट से वरुण गांधी का टिकट काटा गया है, तो उनकी मां का टिकट बरकरार रखकर उन्हें मैदान में न उतारने की योजना बना ली गई है। पार्टी ने इस सीट पर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री जितिन प्रसाद को उतारा है। परिवारवाद पर तगड़ी चोट के बावजूद जीत की बेहतर संभावना दिखी तो बहराइच के सांसद अक्षयवर लाल गौड़ का टिकट काटकर उनके बेटे को उतार दिया गया है।

सपा में संकट... टिकट पर खटपट, मोहिबुल्लाह को उम्मीदवार मानने को तैयार नही सपाई, जिलाध्यक्ष का बड़ा बयान

रामपुर । लोकसभा सीट पर सपा के टिकट के लिए पार्टी में जो खटपट शुरू हुई है वह खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। मुरादाबाद लोकसभा सीट से पहले डॉ. एसटी हसन टिकट दे दिया गया। उन्होंने मंगलवार को अपना नामांकन भी दाखिल कर दिया। अब इस सीट से रुचिवीरा ने सपा प्रत्याशी के तौर पर नामांकन दाखिल कर दिया है। यही हाल रामपुर का है यहां बुधवार की सुबह मोहिबुल्लाह का नाम सपा प्रत्याशी के तौर पर घोषित किया गया। उन्होंने नामांकन भी दाखिल कर दिया। लेकिन इसके बाद आजम खां के करीबी आसिम राजा ने भी अपना नामांकन सपा प्रत्याशी के तौर पर कर दिया। 2019 के लोकसभा चुनाव में सपा को रामपुर और मुरादाबाद सीट पर जीत मिली थी। रामपुर से आजम खां चुनाव जीते थे तो मुरादाबाद से डॉ. एसटी हसन। हालांकि 2022 में विधायक बनने के बाद आजम खां ने लोकसभा की सीट छोड़ दी थी। उपचुनाव में यह सीट भाजपा के घनश्याम लोधी ने जीत ली थी। 2024 के लोकसभा चुनाव में इन दोनों सीटों पर मतदान पहले चरण में होना है। जिसके लिए नामांकन दाखिल करने की आखिरी तिथि 27 मार्च थी। नामांकन की प्रक्रिया 20 मार्च से शुरू हो गई थी। इसके बाद भी सपा ने इन दोनों सीटों पर अपने पत्ते नहीं खोले। राजनीतिक हलको में ऐसी चर्चा थी कि आजम खां से अखिलेश यादव की मुलाकात के बाद इन दोनों सीटों पर प्रत्याशी तय किए जाएंगे।

इसके बाद अखिलेश यादव ने सीतापुर जेल में जाकर आजम खां से मुलाकात की थी। दोनों नेताओं के बीच क्या चर्चा हुई यह तो वही जानें लेकिन एक बात जो बाहर आई वह यह थी कि आजम खां ने अखिलेश यादव से रामपुर से चुनाव लड़ने के लिए कहा है। हालांकि अखिलेश यादव ने साफ तौर पर कुछ नहीं कहा। रामपुर के सपाई भी अखिलेश यादव से मुलाकात करने के लिए लखनऊ गए और उनको आजम खां के सुझाव के मुताबिक फैसला लेने का आग्रह किया। अखिलेश यादव ने होली बाद इस मुद्दे पर फैसला लेने की बात कही। इसके बाद इस चर्चा ने जोर पकड़ लिया किया तेजप्रताप यादव को रामपुर से

प्रत्याशी बनाया जा सकता है। हालांकि इसकी आधिकारिक एलान नहीं किया गया।

इस बीच सपा ने मुरादाबाद सीट से डॉ. एसटी हसन का नाम घोषित कर दिया। डॉ. हसन ने मंगलवार को अपना नामांकन भी दाखिल कर दिया। मंगलवार की रात से यह चर्चा तेज हो गई कि मुरादाबाद से डॉ. एसटी हसन का टिकट कट सकता है। बुधवार की सुबह डॉ. एसटी हसन का टिकट कट गया और रुचि वीरा ने सपा प्रत्याशी के रूप में नामांकन करा दिया। रामपुर से सपा के प्रत्याशी कौन होगा इसको लेकर बुधवार की सुबह तक संशय बना रहा। अचानक से मौलाना मोहिबुल्लाह नदवी का नाम सुर्खियों में आया और उन्होंने दोपहर बाद अपना नामांकन भी करा दिया। इसके बाद आजम खां के करीबी माने जाने वाले आसिम राजा ने भी सपा प्रत्याशी के तौर पर अपना नामांकन दाखिल कर दिया। माना जा रहा है कि मौलाना मोहिबुल्लाह का टिकट होने से आजम खां खुश नहीं हैं। उनके कहने पर ही आसिम राजा ने नामांकन दाखिल किया है।

उधर, सपा के ही अब्दुल सलाम ने निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर पर्चा दाखिल किया है। मुरादाबाद में टिकट कट गया है, लेकिन असली लड़ाई रामपुर की है, जहां अभी सपा प्रत्याशी को सपा से ही जूझना पड़ रहा है।

मौलाना मोहिबुल्लाह के साथ नही थे स्थानीय सपाई

मौलाना मोहिबुल्लाह नदवी बुधवार ने बुधवार को अपना नामांकन दाखिल किया। नामांकन दाखिल करने समय उनके साथ सपा का कोई भी स्थानीय कार्यकर्ता नहीं था। जबकि सपा के प्रदेश अध्यक्ष भी बुधवार को रामपुर में थे। स्थानीय सपाइयों का कहना है कि उनको प्रदेश अध्यक्ष के आने की जानकारी नहीं है। मैंने सपा प्रत्याशी के तौर पर अपना नामांकन दाखिल किया है। अभी तक किसी का नाम फाइनल नहीं है। 30 मार्च तक पता चल जाएगा सपा का अधिकृत प्रत्याशी कौन है।—आसिम राजा

आसिम राजा ही हमारे प्रत्याशी हैं। किसी और के बारे में हमें जानकारी नहीं है। आसिम राजा का चुनाव पूरी मजबूती के साथ लड़ाया जाएगा।—अजय सागर, सपा जिलाध्यक्ष

मैंने सपा प्रत्याशी की हैसियत से नामांकन किया है। इमाम होने के नाते सपा ने मुझे टिकट से नवाजा है। इससे मुल्क के मुसलमानों में अच्छा संदेश जाएगा।—मौलाना मोहिबुल्लाह नदवी

सीएम योगी ने मुजफ्फरनगर में मंच से चौधरी साहब को किया याद

बोले- एक वोट बदल सकता है देश की तकदीर

मुजफ्फरनगर,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आज मुजफ्फरनगर पहुंचे हैं। यहां वह प्रबुद्ध सम्मेलन को संबोधित कर रहे हैं। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत चौधरी चरणसिंह को याद करते हुए की। उन्होंने कहा कि जब से वोट सही हाथों में गया है, तब से अराजकता समाप्त हो गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आज मुजफ्फरनगर लोकसभा के प्रबुद्ध सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे। सीएम योगी के कार्यकम के लिए सुबह से ही कार्यकर्ता पहुंचने शुरू हो गए। जिले के जानसठ रोड स्थित लाला जगदीश प्रसाद स्कूल में आज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भाजपा–रालोद गठबंधन के प्रत्याशी डॉ. संजीव बालियान के चुनाव के लिए कार्यक्रम आहूत किया गया है। कार्यकम स्थल पर कड़े सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं। सीएम योगी मंच पर पहुंचते ही कार्यकर्ताओं ने नारे लगाकर उनका स्वागत किया।

चौधरी साहब को याद कर शुरू किया संबोधन

सीएम योगी आदित्यनाथ मंच पर पहुंचे और चौधरी चरण सिंह को याद करते हुए अपना संबोधन शुरू किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भागवत की भूमि को दुनिया शुकतीर्थ के रूप में जानती है। शुकतीर्थ को पुराना वैभव लौटाने का काम भाजपा सरकार ने किया। जनभावना के अनुरूप काम किया। दुनिया में किसी के पास पांच हजार वर्ष पुराना इतिहास नहीं, लेकिन मुजफ्फरनगर के पास है। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब को सम्मान पहले मिलना चाहिए था। वर्ष 2004 से 2014 के बीच की सरकारों ने उन्हें यह सम्मान नहीं दिया। देश के विकास का रास्ता गांव और खलिहान से होकर जाता है, यह बात चौधरी साहब ने ही कही थी। सीएम योगी ने कहा कि वह आज समाज के नेतृत्व वर्ग से मिलने आए हैं। एक वोट देश की तकदीर बदल सकती है। वोट गलत हाथों में जाता था तो मुजफ्फरनगर में कर्फ्यू लगता था और सही हाथों में वोट जाने से कांवड़ यात्रा निकल रही है। गलत हाथों में वोट जाने के दिनों में यहां लोग आने से डरते थे। अब सही हाथों में वोट गया तो अराजकता समाप्त हो गई।

वोट की ताकत ने ही आस्था को सम्मान दिलायाः योगी

उन्होंने कहा कि पांच सौ वर्षों के बाद वोट की ताकत ने ही आस्था को सम्मान दिलाया है। यूपी में अब तक 18 लाख पीएम स्वनिधि योजना में ऋण की स्वीकृति हुई है। वोट की कीमत समाज को बतानी होगी। एक तरफ फैमिली फर्स्ट और दूसरी तरफ नेशन पहले है। वे जातिवाद की बात करते हैं और मोदी गरीब कल्याण की बात करते हैं। वह तुष्टीकरण की बात करते हैं और मोदी सबका साथ सबका विकास की बात करते हैं।

आरक्षित सीटें... सुरक्षित सत्ता, पिछले चार चुनावों में दो बार भाजपा ने जीती सबसे ज्यादा सुरक्षित सीटें

लखनऊ,संवाददाता। यूपी की आरक्षित सीटों का मिजाज ही अलग है। आंकड़े बताते हैं कि जब भी भाजपा ने सुरक्षित सीटों पर बढ़त हासिल की, उसकी केंद्र में सरकार बनी। यही कारण है कि इन सीटों पर भाजपा ने विशेष काम किया। प्रदेश में लोकसभा की आरक्षित सीटों का मिजाज कुछ अलग होता है। चक्रव्यूह कुछ अलग होता है। मिजाज इसलिए अलग क्योंकि जो बुनियादी मुद्दों को छूता है, वही इन सीटों पर फतह हासिल करता है।

इतिहास बताता है कि इन सीटों से निकला संदेश अन्य सीटों के परिणाम को भी प्रभावित करता है। इतिहास यह भी बताता है कि सत्ता के शिखर तक पहुंचाने के लिए इन सीटों ने मजबूत सीढ़ियां तैयार करने का काम किया है। जिस दल ने इन सीटों का गणित समझ लिया, उसकी नैया पार हो गई। भाजपा ने इस फॉर्मूले को समझा और पिछले दो चुनावों में सबसे ज्यादा आरक्षित सीटों पर विजय पताका फहराई।

प्रदेश के बंटवारे से पहले यूपी में अनुसूचित वर्ग के लिए लोकसभा की (18) सीटों को आरक्षित किया गया था। उत्तराखंड बनने के बाद एक सीट कम हो गई और यूपी में कुल 17 सीटें बचीं। विभाजन के बाद वर्ष 2004 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को मात्र तीन आरक्षित सीटों पर सफलता मिली। इसमें बसपा ने 5, कांग्रेस व अन्य ने 1–1 सीट पर जीत हासिल की। वहीं सपा ने सबसे ज्यादा 7 सीटें जीत लीं। अहम बात यह है कि बंटवारे से ठीक पहले वर्ष 1999 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 7 आरक्षित सीटें जीती थीं। वहीं बसपा ने 5 सीटों पर जीत का परचम लहराया था। इन दोनों को ही वर्ष 2004 के चुनाव में तगड़ा झटका लगा। हालांकि सपा की दो सीटें बढ़ गई थीं। पिछले चार लोकसभा चुनावों की बात करें, तो अब तक सबसे ज्यादा आरक्षित सीटें भाजपा ने जीती हैं। इन चार चुनावों को जोड़कर देखा जाए तो भाजपा ने कुल 37 सीटें जीतीं। बसपा ने 9, कांग्रेस ने 3, सपा ने 17 व दो अन्य ने इन सीटों पर जीत का परचम लहराया।

2014 में भाजपा ने जीती थी सभी 17 सीटें

आंकड़े बताते हैं कि जब भी भाजपा ने सुरक्षित सीटों पर बढ़त हासिल की, उसकी केंद्र में सरकार बनी। यही कारण है कि इन सीटों पर भाजपा ने विशेष काम किया। इसी का परिणाम रहा कि वर्ष 2014 में भाजपा ने प्रदेश की सभी 17 आरक्षित सीटों पर जीत का परचम लहरा दिया। पिछले चुनाव में उसे दो सीटों का नुकसान उठाना पड़ा और बसपा ने नगीना और लालगंज सीट उससे छीन ली। इस चुनाव में फिर से भाजपा ने इन सीटों पर अपनी पूरी ताकत लगाई है।

विधानसभा चुनावों के आंकड़े भी देते हैं इन सीटों के खास होने की गवाही

विधानसभा चुनावों के आंकड़े भी इन सीटों के खास होने की गवाही देते हैं। प्रदेश में कुल 86 सीटें रिजर्व हैं। इनमें दो सीटें एसटी के लिए आरक्षित हैं।

वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा गठबंधन ने कुल 65 सीटों पर जीत का परचम लहराया। हालांकि इससे पहले 2017 के चुनाव में भाजपा ने 70 सीटें हासिल की थीं। दोनों ही बार यूपी में उसकी सरकार बनी।

वर्ष 2012 के चुनाव में सपा ने 58 सुरक्षित सीटें जीती थीं और यूपी में उसकी सरकार बनी थी। वर्ष 2007 के चुनाव में बसपा ने 61 आरक्षित सीटें जीतकर सत्ता के शिखर पर अपना झंडा फहराया था।

... इसलिए अनुसूचित जातियों पर फोकस

सामाजिक न्याय समिति की 2001 की रिपोर्ट के मुताबिक प्रदेश में दलित आबादी करीब 29.04 प्रतिशत है। भले ही प्रदेश में आरक्षित लोकसभा सीटों की संख्या 17 हो, दलित वोट बैंक विभिन्न सीटों पर निर्णायक स्थिति में है। यही कारण है कि सभी दलों का फोकस दलित जातियों के वोट बैंक को साधने पर होता है। हाल में ही रालोद और भाजपा के गठबंधन में भी इसका उदाहरण देखने को मिला।

रालोद के कोटे से विधानसभा की पुरकाजी आरक्षित सीट के विधायक अनिल कुमार को कैबिनेट मंत्री बनाया गया। इसके सहारे रालोद भी एससी वर्ग में एक संदेश देना चाहता है। समाजवादी पार्टी अपने पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक (पीडीए) कार्ड पर लगातार काम रही है, तो भाजपा ने भी इसका खास ख्याल रखा है। बसपा तो शुरू से ही इस वर्ग पर फोकस करती रही है।

प्रयोगधर्मी हैं नगीना के मतदाता, हर बार बदल देते हैं चेहरा

पहले चरण में आरक्षित सीट नगीना पर जंग होगी। यह आरक्षित सीट वर्ष 2009 में पहली बार अस्तित्व में आई। हर बार यहां की जनता नए चेहरे को जिताती रही है। सीट के अस्तित्व में आने के बाद 2009 में हुए चुनाव में यहां से सपा के यशवीर सिंह धोबी ने जीत हासिल की थी। इसके बाद 2014 भाजपा के यशवंत सिंह चुनाव जीते। वर्ष 2019 में बसपा के गिरीश चंद्र ने यशवंत को पटखनी देकर यहां से चुनाव जीत लिया।

इस बार यहां भाजपा से ओमकुमार मैदान में हैं। सपा से मनोज कुमार, बसपा से सुरेंद्र पाल सिंह व आजाद समाज पार्टी से चंद्रशेखर आजाद ताल ठोक रहे हैं। देखना यही है कि नगीना के प्रयोगधर्मी मतदाता इस बार क्या गुल खिलाते हैं।

इन सीटों के मतदाताओं की नब्ज पर जिसने धरा हाथ, वह हो गया चुनावी समर में पार

ये हैं लोकसभा की सुरक्षित सीटें

नगीना, बुलंदशहर, हाथरस, आगरा, शाहजहांपुर, हरदोई, मिश्रिख, मोहनलालगंज, इटावा, जालौन, कौशांबी, बाराबंकी, बहराइच, बांसगांव, लालगंज, मछलीशहर और रॉबर्ट्सगंज मौजूदा वक्त में रिजर्व सीटें हैं। बीते लोकसभा चुनाव में बीएसपी ने लालगंज और नगीना पर जीत दर्ज की थी। बाकी पर भाजपा जीती थी।

जिसकी तैयारी अच्छी, उसे मिलती है सफलता

आरक्षित सीटों का मतदाता भी किसी एक पार्टी का वोटर नहीं है। चूंकि ये सीटें एससी वर्ग के लिए आरक्षित होती हैं, तो समझा जाता है कि यहां का वोटर भी उसी मनोदशा से वोट करेगा। अब लोग पढ़े–लिखे हैं। अपना भला–बुरा सोचकर वोट देते हैं। अन्य सीटों की तरह यह फॉर्मूला इन सीटों पर भी लागू होता है। हां, यह बात जरूर है कि जो दल इन सीटों पर अपनी तैयारी बेहतर करता है, अपना एजेंडा साफ रखता है, चुनाव में उसे इसका फायदा मिलता है। इतिहास बताता है कि ये सीटें सरकार बनाने का रास्ता भी तय करती हैं। – प्रो. दिनेश कुमार, चौधरी चरण सिंह विवि, मेरठ

अयोध्या से रामेश्वरम तक की पदयात्रा

एक करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य, जल–जंगल बचाने की कोशिश

लखनऊ,संवाददाता। शिप्रा बताती हैं कि यात्रा का मुख्य मकसद राम के समय में जो जंगल व नदियां जिस दशा में थीं, उन्हें उसी दशा में फिर वापस लाना है। ये जंगल व नदियां ही इस बात की साक्षी हैं कि राम जी वहां से होकर निकले थे। उनकी दादी चार बार और नाना एक बार विधायक रहे। पिता ने भी राजनीति में भाग्य आजमाया लेकिन उन्होंने राजनीति को नहीं चुना। वह अंग्रेजी साहित्य से परास्नातक हैं पर नौकरी को तवज्जो नहीं दी।

वह भगवा पहनती हैं और धर्म व अध्यात्म की गहराई से बात करती हैं लेकिन सिर्फ मठ या मंदिरों के भ्रमण तक सीमित नहीं रहीं। उम्र 37 साल है और वह पीढ़ियों की चिंता करती हैं। उनकी सबसे बड़ी चिंता है घटते जल और कटते जंगल। उनकी चिंता है बेटियों की संस्कृति व संस्कार से बढ़ती दूरी। वह इसकी सिर्फ बात नहीं करती हैं। इसके लिए वह कई हजार किलोमीटर की पद यात्राएं कर चुकी हैं और एक करोड़ पौधे लगाने के संकल्प की सिद्धि में जुटने जा रही हैं।

हम बात कर रहे हैं बदायूं के दातागंज की शिप्रा पाठक की। उन्होंने हाल में अयोध्या से रामेश्वरम की 3,952 किमी की पद यात्रा पूरी की है। शिप्रा बताती हैं कि यात्रा का मुख्य मकसद राम के समय में जो जंगल व नदियां जिस दशा में थीं, उन्हें उसी दशा में फिर वापस लाना है। ये जंगल व नदियां ही इस बात की साक्षी हैं कि राम जी वहां से होकर निकले थे।

गोदावरी के तट से ही समझ पाते हैं कि वहां राम, सीता और लक्ष्मण ने वनवास किया। सरयू के तट से ही हम समझ पा रहे हैं कि राम जी का चारों भाइयों के साथ वहां जन्म हुआ। जिस दिन ये नदियां नहीं रहेंगी, उस दिन इनकी प्रामाणिकता क्या रहेगी। शिप्रा कहती हैं कि आज हमने अयोध्या में भले ही राम मंदिर बनाया है। रामलला वहां बैठे हैं, पर पास से बहने वाली सरयू में प्लास्टिक गिरेंगे, नाले गिरेंगे, दुर्गंध आएगी तो राममंदिर की शोभा क्या रहेगी? मंदिरों के साथ–साथ नदियां और जंगल भी विकसित होने जरूरी हैं। सरकार अपने प्रयास करें और नागरिक अपने प्रयास करें तभी बात बनेगी। हम नागरिक समाज को जागृत करने के लिए निकले हैं।

दूसरी बड़ी चिंता बेटियां...

शिप्रा कहती हैं कि बेटियां चांद पर पहुंचे लेकिन संस्कृति–संस्कार के साथ आगे बढ़े, यह बहुत जरूरी है। इस यात्रा का एक उद्देश्य यह भी था। वह कहती हैं कि आज की स्त्री अधिक शिक्षित, जागरूक व आधुनिक है। पर कहीं न कहीं संस्कृति व संस्कार से दूर हो रही हैं। बेटियों को यह समझाने की जरूरत है कि आप चांद पर भी पहुंच जाओ लेकिन अपनी मूल संस्कृति व संस्कार को अपना कर ही आगे बढ़ो। पहनावा, बातचीत व आचरण, सब भारतीय पद्धति के अनुरूप होना चाहिए।

महराज के सीएम बनने से बदला यूपी के प्रति नजरिया

शिप्रा कहती हैं कि इस यात्रा के दौरान व उससे इतर करीब 11–12 राज्यों तक आना–जाना हो रहा है। एक बात जो सबसे अहम नोटिस की, वह है यूपी के बारे में लोगों के सोचने का नजरिया। दूसरे राज्यों में यह पता चलने पर कि यूपी से आई हूं, लोग पूछते हैं कि राम मंदिर वाले योगी जी के यहां से आई हैं? कई जगह लोग योगी के कड़क प्रशासन और अनुशासन की तारीफ करते मिले। वह कहती हैं कि योगी की छवि किसी मठ के महंत और आम मुख्यमंत्री से हटकर उभरी है।

अभी 85 लाख पौधे और लगाने हैं

वह बताती हैं कि एक करोड़ पौधे लगाने का संकल्प है। हम अब तक 15 लाख पौधे लगा चुके हैं। अब 85 लाख पौधे लगाने का अभियान तेज करेंगी। हमारा प्रयास है कि नदियां प्लास्टिक मुक्त हों। नदियों के किनारे पौधरोपण हों ताकि नदी की कटान रोक पाएं। नदियों के पाट जो सिमट रहे हैं, वह चौड़े बने रहें।

15 नदियों के जल से किया रामेश्वरम भगवान का जलाभिषेक

शिप्रा बताती हैं कि पद यात्रा मार्ग में पड़ने वाली 15 प्रमुख नदियों सरयू, गंगा, यमुना,सरस्वती, मंदाकिनी, नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा, तुंगभद्रा, तमसा व वैगई से जल लेकर भगवान रामेश्वरम महादेव का अभिषेक किया।

जानिए यात्रा के बारे में

– 27 नवंबर 2023 अयोध्या से पदयात्रा शुरू की। राम जानकी वनगमन पथ पर यूपी, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र व कर्नाटक होते हुए तमिलनाडु के रामेश्वरम तक यात्रा की।

– 105 दिनों में यात्रा 11 मार्च को रामेश्वरम में संपन्न हुई।

– शिप्रा की दादी स्वर्गीय संतोष कुमारी पाठक दातागंज से चार बार विधायक रही हैं।

– शिप्रा के नाना त्रिवेणी सहाय एक बार विधायक रहे।

– पिता डॉ. शैलेश पाठक भी राजनीति में सक्रिय रहे।

तमिलनाडु में विवाद पर समर्थन में आए लोग

तमिलनाडु में विवाद से जुड़े सवाल पर शिप्रा कहती हैं कि मदुरई से रामेश्वरम के बीच कुछ लोगों को राम के नाम पर आपत्ति थी। उन्होंने गाड़ी पर हमला किया। उनका कहना था कि अगर राम के नाम पर यात्रा कर रही हैं तो यह राजनीतिक यात्रा है। इस पर हमने वहां स्पष्ट किया कि राम हमारे श्रद्धा के केंद्र हैं, राजनीति के नहीं। वहां जब लोगों को यात्रा का उद्देश्य पता चला तो वे भी हमारे समर्थन में खड़े हुए।

भागवत, गोविंद देव, रामदेव व चिदानंद मुनि का मिला समर्थन

शिप्रा बताती हैं कि पर्यावरण जैसे गंभीर विषय पर आगे बढ़ी तो तरह–तरह के विचार मन में थे। लेकिन यात्रा को आरएसएस के सर संघचालक मोहन भागवत, सर कार्यवाह भैया जी जोशी, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष गोविंद देव गिरी, बाबा रामदेव, परमार्थ निकेतन के चिदानंद मुनि, कैलाश मठ व बाघंबरी मठ के महंत सहित संत समाज का जगह–जगह आशीर्वाद और समर्थन मिला।

सुल्तानपुर लोकसभा सीट

बाहरियों की रही बहार

72 में से 38 वर्ष तक फहराया जीत का झंडा

1951–52 के पहले आमचुनाव में सुल्तानपुर सीट का नाम था सुल्तानपुर जिला उत्तर साथ फैजाबाद जिला दक्षिण पश्चिम। अमेठी सीट पहले चुनाव में सुल्तानपुर (दक्षिण) और 1957 के दूसरे चुनाव में मुसाफिरखाना संसदीय क्षेत्र कहलाई। कांग्रेस ने दोनों ही चुनावों में दोनों ही सीटों पर 1952 और 1957 दोनों ही चुनावों में बाहरी उम्मीदवार उतारे और दोनों बार कामयाबी मिली। इससे स्थानीय कांग्रेस नेताओं में गहरी नाराजगी थी। जिसके चलते जब 1961 में गोविंद मालवीय की मृत्यु के बाद उपचुनाव हुआ तो शहर के प्रतिष्ठित अधिवक्ता व कांग्रेस नेता गणपत सहाय निर्दल उम्मीदवार के रूप में कांग्रेस उम्मीदवार के सामने उतरे और कड़े मुकाबले में जीत हासिल कर ली।

लखनऊ,संवाददाता। 17 आमचुनावों और तीन उपचुनावों में आठ बार जीतकर 38 वर्ष जिले से बाहर के प्रत्याशी सांसद रहे। वहीं, 12 चुनाव स्थानीय प्रत्याशियों ने जीते। दिलचस्प और दिलदार...। कुछ ऐसे ही हैं अपने सुल्तानपुर के मतदाता। पहले चुनाव से लेकर अब तक सुल्तानपुर का इतिहास खंगालें तो यह सीट बाहरी प्रत्याशियों को खूब रास आती है। देश के पहले आम चुनाव से ही कांग्रेस ने यह परिपाटी शुरू की जो 1961 में करारा झटका खाने के बाद बदल गई। किंतु भाजपा को जीत ही तभी मिली जब उसने बाहरी प्रत्याशियों पर भरोसा जताया। यही वजह है कि सुल्तानपुर सीट पर अब तीन उपचुनाव समेत कुल 20 चुनाव हुए। जिसमें आठ बार बाहरी प्रत्याशी जीते और 72 वर्ष में 38 वर्ष सांसद रहे।

1951–52 के पहले आमचुनाव में सुल्तानपुर सीट का नाम था सुल्तानपुर जिला उत्तर साथ फैजाबाद जिला दक्षिण पश्चिम। अमेठी सीट पहले चुनाव में सुल्तानपुर (दक्षिण) और 1957 के दूसरे चुनाव में मुसाफिरखाना संसदीय क्षेत्र कहलाई। कांग्रेस ने दोनों ही चुनावों में दोनों ही सीटों पर 1952 और 1957 दोनों ही चुनावों में बाहरी उम्मीदवार उतारे और दोनों बार कामयाबी मिली। इससे स्थानीय कांग्रेस नेताओं में गहरी नाराजगी थी। जिसके चलते जब 1961 में गोविंद मालवीय की मृत्यु के बाद उपचुनाव हुआ तो शहर के प्रतिष्ठित अधिवक्ता व कांग्रेस नेता गणपत सहाय निर्दल उम्मीदवार के रूप में कांग्रेस उम्मीदवार के सामने उतरे और कड़े मुकाबले में जीत हासिल कर ली।

इस झटके ने कांग्रेस की रणनीति बदल दी। इसके बाद कांग्रेस स्थानीय उम्मीदवारों पर दांव लगाने लगी। जिन्हें सफलता भी मिलती रही। दौर बदला और बहुजन समाज पार्टी का दौर आया तो बसपा ने भी यहां से स्थानीय उम्मीदवार उतारे। जिसमें से जयभद्र सिंह और मोहम्मद ताहिर को सफलता भी मिली। किंतु भाजपा की ओर से केवल बाहरी प्रत्याशी ही इस सीट पर कामयाब रहे। जनसंघ से भाजपा तक एक उपचुनाव सहित 12 चुनावों में उम्मीदवार उतारने वाली भाजपा (पूर्व में जनसंघ) को पांच मौकों पर तभी जीत मिली, जब उसने बाहरी उम्मीदवार मैदान में उतारे। ऐसे में यह देखना रोचक है कि सुल्तानपुर सीट के इस इतिहास को देखते हुए राजनीतिक दल किस तरह के प्रत्याशी को तवज्जो देते हैं।

एक कार्यकाल में दो–दो उपचुनाव

संसदीय चुनाव के इतिहास में एक बार ऐसा भी हुआ, जब सुल्तानपुर सीट पर एक ही कार्यकाल में दो–दो उपचुनाव हुए। 1967 में कांग्रेस के टिकट पर गणपत सहाय सांसद बने थे। 1969 में उनके निधन पर यह सीट खाली हुई तो श्रीपति मिश्र यहां से सांसद चुने गए। 1970 में श्रीपति मिश्र प्रदेश की चौधरी चरण सिंह सरकार में शिक्षामंत्री बनाए गए तो उन्होंने संसद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद 1970 में यहां दोबारा उपचुनाव हुए।

अंजलि अरोड़ा ने मटकाई कमरिया

अंग्रेजी गाने पर शार्ट ड्रेस पहन दिखाए ऐसे मूव्स, लोग बोले– ये क्या कर गई

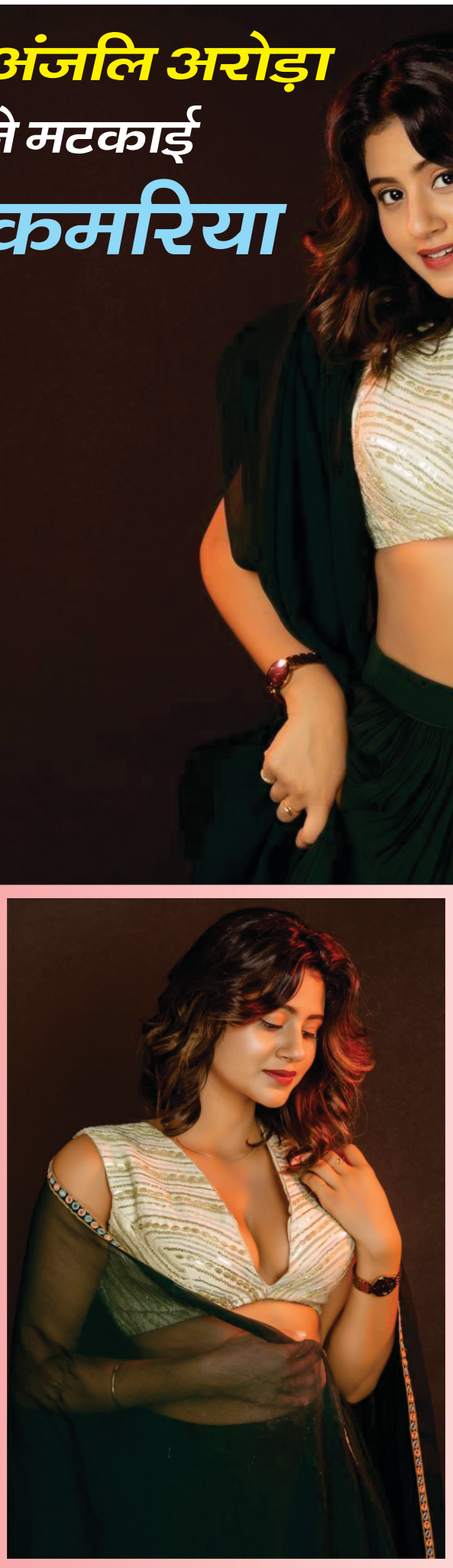

मुम्बई,एजेंसी। अंजलि अरोड़ा का एक डांस वीडियो तेजी से इंटरनेट पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में अंजलि अरोड़ा अंग्रेजी के ट्रेंडिंग सॉन्ग 'पिपल' पर जबरदस्त कातिलाना मूव्स दिखाती नजर आ रही हैं। सोशल मीडिया सेंसेशन और फेमस रिएलिट शो 'लॉकअप' की एक्स कंटेस्टेंट रह चुकीं अंजलि अरोड़ा अपने डांस वीडियोज को लेकर अक्सर सुर्खियों में छाई रहती हैं। अंजलि अरोड़ा अपने म्यूजिक वीडियोज को लेकर लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी रहती हैं। लोगों को उनके ये म्यूजिक वीडियोज खूब पसंद आते हैं। 'लॉकअप' शो खत्म होने के बाद से ही अंजलि अपने इन म्यूजिक वीडियोज को लेकर काफी व्यस्त हो गई थीं। 'कच्चा बादाम' गर्ल अंजलि अरोड़ा पिछले दिनों कथित एमएमएस वीडियो को लेकर सोशल मीडिया पर ट्रेंड करने लगी थीं। हालांकि, उन्होंने साफ–साफ कह दिया था कि लीक हुए एमएमएस वीडियो में वह नहीं हैं, वो लड़की कोई और है। फिलहाल अंजलि अरोड़ा का लेटेस्ट वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो में अंजलि अपने बेडरूम में जबरदस्त डांस करती नजर आ रही हैं। अंजलि अरोड़ा ने दिखाए कातिलाना मूव्स आपको बता दें कि मॉडल और एक्ट्रेस अंजलि ने सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर के तौर पर काफी नाम कमाया है। अंजलि की हर तस्वीर और वीडियो इंटरनेट पर आग की तरह फैलती है। हाल ही में एक अंजलि का एक डांस वीडियो तेजी से इंटरनेट पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में अंजलि अरोड़ा अंग्रेजी के ट्रेंडिंग सॉन्ग 'पिपल' पर जबरदस्त कातिलाना मूव्स दिखाती नजर आ रही हैं। अंजलि अरोड़ा का डांस वीडियो वायरल अंजलि अरोड़ा के फैंस की मानें तो उनका ये डांस वैलेंटाइन गिफ्ट के तौर पर सामने आया है। इस लेटेस्ट डांस वीडियो पर लोग जमकर कमेंट्स कर रहे हैं। आपको बता दें कि अंजलि अरोड़ा के इस वीडियो को सिर्फ 5 घंटे के अंदर 4 लाख से ज्यादा लोग देख चुके हैं। कई हजार लोग इस वीडियो पर कमेंट्स भी कर चुके हैं।

मौनी की हाटनेस देख छूटे फैंस के पसीने

अदिति राव हैदरी ने सिद्धार्थ संग लिए सात फेरे

तेलंगाना के मंदिर में रचाई शादी

बॉलीवुड के सितारे सिद्धार्थ और अदिति राव हैदरी ने गुपचुप शादी रचा ली है. मिली जानकारी के मुताबिक, आज 27 मार्च को दोनों ने तेलंगना में श्री रंगानायकस्वामी मंदिर में शादी रचाई है. अब फैंस दोनों की शादी की तस्वीरों का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं.

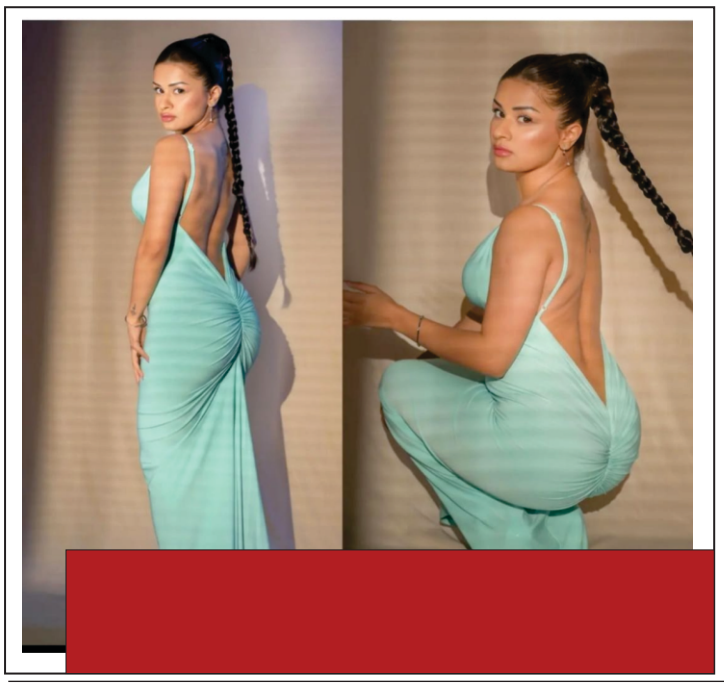

एंटरटेनमेंट डेस्क। हॉलीवुड स्टार विन डीजल इन दिनों एक बार फिर से सुर्खियां बटोर रहे हैं। वे बॉलीवुड स्टार दीपिका पादुकोण को काफी पसंद करते हैं। 'फास्ट एंड फ्यूरियस' स्टार दीपिका के साथ 'एक्स एक्स एक्सः रिटर्न ऑफ जेंडर केज' में एक साथ काम कर चुके हैं। आइए आपको बताते हैं आखिर विन डीजल ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल ऐसा साझा किया है जो इतना वायरल हो रहा है––

दीपिका पादुकोण के चाहने वाले न सिर्फ बॉलीवुड में हैं बल्कि हॉलीवुड के कई स्टार्स भी उनकी खूबसूरती और एक्टिंग के दीवाने हैं। अभिनेता विन डीजल जो एक्शन फिल्मों के लिए मशहूर हैं वे भी दीपिका की अदाओं के कायल हैं। हाल ही विन डीजल ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल से दीपिका पादुकोण के साथ अपनी एक तस्वीर को साझा करते हुए लंबा सा पोस्ट भी लिखा है। डीजल ने लिखा है, 'यह तस्वीर तब की है जब मैं भारत गया था। मैंने दीपिका से वादा किया था कि मैं उनके देश जरूर आऊंगा और मैंने अपना वादा पूरा किया।'

फिर से दीपिका की यादों में खोए दिखे विन डीजल

'धोनी अब बूढ़े हो गए', कमेंट्री के दौरान सहवाग ने थाला को कहा 'बुजुर्ग', इस खिलाड़ी को बताया फिट

स्पोर्ट्स डेस्क। आईपीएल 2024 का सातवां मुकाबला गुजरात टाइटंस और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच खेला गया था। इस दौरान माही ने विजय शंकर का कैच लपकने के लिए 0.60 सेकंड के रिएक्शन टाइम में लगभग 2.3 की छलांग लगाई और डाइव लगाकर शानदार कैच लपका। इस मैच में अजिंक्य रहाणे और रचिन रवींद्र ने भी शानदार कैच पकड़े। आईपीएल 2024 में पूर्व भारतीय बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग को हिंदी और हरियाणा में कमेंट्री करते देखा जा रहा है। इस दौरान उन्होंने चेन्नई सुपर किंग्स के पूर्व कप्तान को लेकर कुछ ऐसा बयान दे दिया है जिसकी वजह से वह चर्चाओं में बने हुए हैं। सहवाग ने धोनी को बुजुर्ग और अजिंक्य रहाणे को फिट करार दिया है जबकि हाल ही में दिग्गज खिलाड़ी ने दाईं तरफ डाइव लगाकर विकेट के पीछे से विजय शंकर का कैच लपका था।

आईपीएल 2024 का सातवां मुकाबला गुजरात टाइटंस और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच खेला गया था। इस दौरान माही ने विजय शंकर का कैच लपकने के लिए 0.60 सेकंड के रिएक्शन टाइम में लगभग 2.3 की छलांग लगाई और डाइव लगाकर शानदार कैच लपका। इस मैच में अजिंक्य रहाणे और रचिन रवींद्र ने भी शानदार कैच पकड़े। इस पर सहवाग ने सीएसके की फील्डिंग की तारीफ की। इस दौरान उन्होंने धोनी को बुजुर्ग को रहाणे को फिट बताया।

सहवाग का बयान

सहवाग ने कहा, "कैच से आप मैच जीतते हैं। अजिंक्य रहाणे और रचिन ने अच्छा कैच पकड़ा। बुजुर्ग एमएस धोनी ने भी एक पकड़ा।" इस पर रोहित गावस्कर ने कहा, "आपने रहाणे को बुजुर्ग नहीं कहा।" सहवाग ने आगे कहा, "दोनों की उम्र में अंतर है और रहाणे धोनी से फिट है। 35 साल और 42 साल में काफी अंतर होता है। धोनी अब बूढ़े हो रहे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।" पूर्व सलामी बल्लेबाज ने मजाकिया अंदाज में धोनी को बुजुर्ग कहा।

राजस्थान के तूफान में उड़ा दिल्ली का खेमा, लगातार दूसरी हार का जिम्मेदार कौन ? रियान का जादू चला

स्पोर्ट्स डेस्क। दिल्ली कैपिटल्स को आईपीएल 2024 में लगातार दूसरी शिकस्त मिली है। इससे पहले पंजाब किंग्स ने दिल्ली को चार विकेट हराया था। राजस्थान ने लगातार दूसरी जीत के साथ अपने नेट रनरेट में सुधार कर लिया है। चार अंक और 0.800 के नेट रनरेट के साथ टीम अंक तालिका में दूसरे स्थान पर है। वहीं, दिल्ली कैपिटल्स आठवें पायदान पर है। दिल्ली और मुंबई दो ऐसी टीमें हैं जिन्हें अब तक इस टूर्नामेंट में कोई जीत नहीं मिली है। दिल्ली कैपिटल्स और राजस्थान रॉयल्स के बीच गुरुवार को खेले गए मैच में संजू सैमसन की टीम ने मेहमानों को 12 रन से हरा दिया। राजस्थान ने 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 185 रन बनाए। इसके जवाब में दिल्ली 20 ओवर में पांच विकेट गंवाकर सिर्फ 173 रन ही बना सकी। दिल्ली कैपिटल्स को आईपीएल 2024 में लगातार दूसरी शिकस्त मिली है। इससे पहले पंजाब किंग्स ने दिल्ली को चार विकेट हराया था। राजस्थान ने लगातार दूसरी जीत के साथ अपने नेट रनरेट में सुधार कर लिया है। चार अंक और 0.800 के नेट रनरेट के साथ टीम अंक तालिका में दूसरे स्थान पर है। वहीं, दिल्ली कैपिटल्स आठवें पायदान पर है। दिल्ली और मुंबई दो ऐसी टीमें हैं जिन्हें अब तक इस टूर्नामेंट में कोई जीत नहीं मिली है।

बर्गर ने तीन गेंदों में चटकाए दो विकेट

दिल्ली की इस मैच में अच्छी शुरुआत हुई थी। डेविड वॉर्नर और मिचेल मार्श के बीच पहले विकेट के लिए 30 रन की साझेदारी हुई जिसे बर्गर ने चौथे ओवर में तोड़ा। मार्श 12 गेंदों में पांच चौकों की मदद से 23 रन बनाने में कामयाब हुए। इसके बाद टीम को दूसरा झटका रिकी भुई के रूप में लगा जिन्हें बर्गर ने अपने चौथे ओवर की चौथी गेंद पर शिकार बनाया। तीन गेंदों में उन्हें दो सफलता मिली। भुई बिना खाता खोले पवेलियन लौटे। 30 रन के स्कोर पर दिल्ली ने दो विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद डेविड वॉर्नर औ ऋषभ पंत के बीच अच्छी साझेदारी हुई। तीसरे विकेट के लिए दोनों ने 67 रन की पार्टनरशिप की। वॉर्नर ने 34 गेंदों में पांच चौकों और तीन छक्कों की मदद से 49 रन बनाए। वहीं, कप्तान पंत 28 रन बनाने में कामयाब हुए। उन्हें चहल ने अपना शिकार बनाया। इसके बाद दिल्ली को पांचवां झटका अभिषेक पोरेल के रूप में 122 रन के स्कोर पर लगा। चहल ने अपनी घातक गेंदबाजी का कहर बरपाते हुए उन्हें 16वें ओवर की तीसरी गेंद पर लौटा दिया। वह सिर्फ नौ रन बना सके।

स्टब्स और अक्षर पटेल नहीं दिला पाए टीम को जीत

इसके बाद ट्रिस्टन स्टब्स और अक्षर पटेल ने टीम को जीत दिलाने की कोशिश की, लेकिन वह नाकाम रहे। दोनों के बीच 51 रन की नाबाद साझेदारी हुई। स्टब्स ने 191.30 के स्ट्राइक रेट से 44 रन बनाए। इस दौरान उनके बल्ले से दो चौके और तीन छक्के लगाए। वहीं, अक्षर पटेल ने 15 रन बनाए। राजस्थान के लिए नांद्रे बर्गर और युजवेंद्र चहल ने दो–दो विकेट चटकाए। वहीं, आवेश खान को एक सफलता मिली। आखिरी ओवर में इस गेंदबाज ने सिर्फ चार रन खर्च किए। 20वें ओवर में दिल्ली को जीत के लिए 16 रन की जरूरत थी, लेकिन आवेश खान ने घातक गेंदबाजी कर स्टब्स और अक्षर को रन बटोरने से रोक दिया।

36 रन के बाद लड़खड़ाई राजस्थान की पारी

बल्लेबाजी के दौरान संजू सैमसन की टीम को संघर्ष करते देखा गया। टीम को पहला झटका सिर्फ नौ रन के स्कोर पर लगा। यशस्वी जायसवाल सिर्फ पांच रन बना सके और पवेलियन लौट गए। दिल्ली के खिलाफ राजस्थान ने 36 रन के स्कोर पर तीन विकेट खो दिए थे। टीम को दूसरा झटका जोस बटलर के रूप में लगा जो सिर्फ 11 रन बना सके जबकि संजू सैमसन 15 रन बनाकर पवेलियन लौटे। इसके बाद पांचवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए रविचंद्रन अश्विन आए। उन्होंने रियान पराग के साथ चौथे विकेट के लिए 54 रन की साझेदारी निभाई। अश्विन ने इस मैच में 19 गेंदों का सामना किया और 29 रन बनाए। इसके बाद ध्रुव जुरेल ने भी 20 रन की तेज पारी खेली। उन्होंने 12 गेंदों का सामना किया और तीन चौके जड़े।

रियान पराग और हेटमायर का गरजा बल्ला

सातवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए शिमरोन हेटमायर उतरे। उन्होंने रियान पराग के साथ 43 रन की नाबाद साझेदारी निभाई। हेटमायर इस मैच में 14 रन बनाकर नाबाद रहे। वहीं, रियान पराग ने तूफानी पारी की बदौलत राजस्थान का स्कोर 180 के पार पहुंचा दिया। उन्होंने 45 गेंदों का सामना किया और सात चौकों और छह छक्कों की मदद से 84 रन बनाए। आखिरी ओवर में उन्होंने शिमरोन हेटमायर को निशाना बनाया और 25 रन बटोरे। पराग भी इस मैच में नाबाद रहे। दिल्ली के लिए खलील अहमद, मुकेश कुमार, एनरिच नॉर्खिया, अक्षर पटेल और कुलदीप यादव ने एक–एक विकेट चटकाया।

रियान पराग ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ रचा इतिहास

स्पोर्ट्स डेस्क। रियान पराग के लिए यह मुकाबला काफी खास रहा। दिल्ली के खिलाफ उन्होंने अपने टी20 करियर का 100वां मैच खेला। उन्होंने घरेलू क्रिकेट में 34 टी20 मैच खेले। इसी के साथ उन्होंने संजू सैमसन का रिकॉर्ड तोड़ दिया। रियान सबसे युवा भारतीय खिलाड़ी बन गए जिन्होंने 100 टी20 मैच खेले। उन्होंने 22 वर्ष और 139 दिन की उम्र में 100वां टी20 मैच खेला जबकि संजू सैमसन ने 22 वर्ष और 157 दिन की आयु में 100वां मुकाबला खेला था। राजस्थान रॉयल्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच गुरुवार को आईपीएल 2024 का नौवां मुकाबला खेला गया। इस मैच में राजस्थान ने लगातार दूसरी जीत दर्ज की। टीम की इस जीत में रियान पराग ने अहम भूमिका निभाई। उनकी अर्धशतकीय नाबाद पारी के बदौलत संजू सैमसन की टीम ने 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 185 रन बनाए। इस विस्फोटक प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच के अवॉर्ड से नवाजा गया। दाएं हाथ के बल्लेबाज ने अपनी टीम के कप्तान संजू सैमसन का एक रिकॉर्ड तोड़ दिया है।

असम के इस बल्लेबाज ने आईपीएल 2024 में लखनऊ सुपर जाएंट्स के खिलाफ सीजन के शुरुआती मैच में 43 रनों की शानदार पारी खेली थी। हालांकि, वह अर्धशतक से चूक गए। आज उन्होंने 45 गेंदों में 84 रन की नाबाद पारी खेली। इस दौरान उनके बल्ले से सात चौके और छह छक्के निकले। 56 आईपीएल मैचों में यह उनके करियर का तीसरा अर्धशतक निकला। उनकी इस दमदार पारी की बदौलत राजस्थान ने दिल्ली को मात दी।

रियान पराग ने तोड़ा संजू सैमसन का रिकॉर्ड

रियान पराग के लिए यह मुकाबला काफी खास रहा। दिल्ली के खिलाफ उन्होंने अपने टी20 करियर का 100वां मैच खेला। उन्होंने घरेलू क्रिकेट में 34 टी20 मैच खेले। इसी के साथ उन्होंने संजू सैमसन का रिकॉर्ड तोड़ दिया। रियान सबसे युवा भारतीय खिलाड़ी बन गए जिन्होंने 100 टी20 मैच खेले। उन्होंने 22 वर्ष और 139 दिन की उम्र में 100वां टी20 मैच खेला जबकि संजू सैमसन ने 22 वर्ष और 157 दिन की आयु में 100वां मुकाबला खेला था। इस लिस्ट में वॉशिंगटन सुंदर, ईशान किशन और ऋषभ पंत का नाम भी शामिल है, जिन्होंने 22 वर्ष की आयु में अपने करियर का 100वां टी20 मुकाबला खेला।

मैच के बाद भावुक हुए रियान पराग

इस मैच के बाद रियान काफी भावुक हो गए। उन्होंने अपनी मां का जिक्र किया और अपने संघर्ष पर चर्चा की। 22 वर्षीय बल्लेबाज ने कहा, "मेरी मां भी यहां हैं, उन्होंने मेरा संघर्ष देखा है। मैंने हमेशा अपने ऊपर विश्वास किया है। मुझे इससे फर्क नहीं पड़ता कि कौन क्या सोच रहा है। पहले चार में से किसी एक को बीस ओवर खेलना होगा और यह एक ऐसा पहलू है जिस पर हम काफी समय से चर्चा कर रहे हैं। पिछले मैच में संजू भैया ने यह जिम्मेदारी निभाई और इस मैच में यह काम मुझे करना था।"

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003
Tital code: UPHIN51019
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।